वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 80 शनिवार 29 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

लोकभवन में हर्षोल्लास से मनाया रक्षाबंधन का पर्व

महिलाओं ने बागड़े को बांधी राखी

जयपुर. शाबाश इंडिया

लोकभवन में शुक्रवार को रक्षाबंधन का पावन पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान महिलाओं और बच्चों ने लोकभवन पहुंचकर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े की कलाई पर राखी बांधी। राज्यपाल बागड़े ने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के प्यार के रूप में परस्पर प्रेम और विश्वास का पावन उत्सव है। उन्होंने रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तिकरण के प्रति संकल्पबद्ध होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन कर्तव्य और संरक्षण की भावना का पावन पर्व है।

नगर निकाय चुनाव में भाजपा-कांग्रेस के लिए बागी-निर्दलीय बनेंगे बड़ी चुनौती

नगरीय निकाय चुनाव इस बार सिर्फ भाजपा-कांग्रेस के बीच मुकाबला नहीं रहने वाला, बल्कि टिकट की होड़ और स्थानीय राजनीतिक समीकरणों के चलते कई वार्डों में बहुकोणीय संघर्ष के आसार है।

राजनीतिक समीकरणों के चलते कई वार्डों में बहुकोणीय संघर्ष के आसार

जयपुर. शाबाश इंडिया

नगरीय निकाय चुनाव इस बार सिर्फ भाजपा-कांग्रेस के बीच मुकाबला नहीं रहने वाला, बल्कि टिकट की होड़ और स्थानीय राजनीतिक समीकरणों के चलते कई वार्डों में बहुकोणीय संघर्ष के आसार है। युवाओं को टिकट देने की राजनीतिक दलों की कवायद ने दावेदारों की संख्या बढ़ा दी है। टिकट नहीं मिलने पर बड़ी संख्या में बागी और निर्दलीय मैदान में उतर सकते हैं। पिछले चुनाव में औसतन एक वार्ड में चार से कम उम्मीदवार थे, जबकि इस बार यह संख्या पांच तक पहुंचने का अनुमान है। राजस्थान में निकायों की संख्या 196 से बढ़कर 309 और वार्ड 7,500 से बढ़कर 10,245 होने से चुनावी मैदान भी करीब डेढ़ गुना बड़ा हो गया है। पिछले निकाय चुनाव में 9,972 महिलाएं मैदान में उतरी थीं। इस बार महिलाओं को भी अधिक प्रतिनिधित्व देने की कोशिश हो रही है। ऐसे में

युवा कार्ड ने बढ़ाई राजनीतिक हलचल

भाजपा और कांग्रेस समेत राजनीतिक दल युवाओं को चुनावी मैदान में उतारने पर जोर दे रहे हैं। इससे पहली बार चुनाव लड़ने वाले युवा दावेदार बड़ी संख्या में टिकट मांग रहे हैं। टिकट वितरण के बाद जिन दावेदारों की उम्मीद टूटेगी, उनमें से कई निर्दलीय या बागी उम्मीदवार के तौर पर मैदान में उतर सकते हैं। यही वजह है कि इस बार एक-एक वार्ड में मुकाबला पिछले चुनाव के मुकाबले ज्यादा दिलचस्प रहने की संभावना है।

महिलाओं की संख्या पिछली बार के मुकाबले बढ़ने की संभावना है। आरक्षित वार्डों के साथ सामान्य वार्डों में भी महिलाएं टिकट के लिए सक्रिय है।

बसपा सहित तीसरा मोर्चा भी सक्रिय

तीसरे मोर्चे में बसपा सबसे ज्यादा उम्मीदवार उतारने की तैयारी में है। आरएलपी, एनसीपी, सीपीआइ और सीपीआइ (एम) भी अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में प्रत्याशी उतारने की रणनीति बना रहे हैं। इससे कई वार्डों में भाजपा-कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर के बजाय त्रिकोणीय या बहुकोणीय मुकाबला बन सकता है।

टिकट नहीं तो निर्दलीय का रास्ता

भाजपा और कांग्रेस कुछ वार्डों में स्थानीय राजनीतिक समीकरणों को देखते हुए अधिकृत प्रत्याशी नहीं उतारकर निर्दलीय उम्मीदवारों को समर्थन दे सकती हैं। इस पर मंथन चल रहा है। दोनों दलों ने पिछले चुनावों में भी ऐसी रणनीति अपनाई थी। इस बार टिकट की संख्या से अधिक दावेदार होने के कारण यह विकल्प कई वार्डों में राजनीतिक समीकरण साधने का जरिया बन सकता है। पिछला निकाय चुनाव 2019 से 2021 के बीच पांच चरणों में 196 निकायों में हुआ था। तब 7,500 वार्डों में 27,462 उम्मीदवार मैदान में उतरे थे। इस बार 309 निकायों में एक साथ चुनाव हो रहा है और वार्डों की संख्या 10,245 हो गई है। टिकट के लिए राजनीतिक दलों के कार्यालयों में उमड़ रही भीड़ और निर्दलीय दावेदारों की संख्या को देखते हुए कुल उम्मीदवार 40 हजार पार कर सकते हैं।

|| आचार्य श्री १०८ विद्यासागराय नमः ||

|| देवाधिदेव श्री १००८ आदिनाथाय नमः ||

|| मुनिपुंगव श्री १०८ सुधासागराय नमः ||

संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

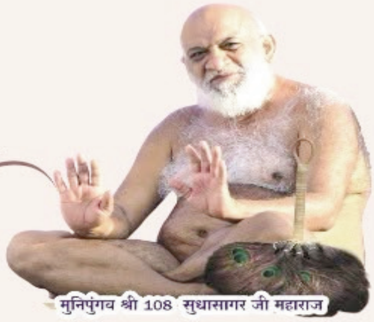

मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं
परम पूज्य निर्यापक मुनि पुंगवश्री 108 सुधासागरजी महाराज
की प्रेरणा से संस्थापित

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, जयपुर

31वाँ स्थापना दिवस एवं नवीनीकृत कार्यालयों का लोकार्पण समारोह

दिनांक 1 सितम्बर, 2026-मंगलवार • समय : प्रातः 8.30 बजे
स्थान : विद्यासुधा सभा मण्डप, संस्थान परिसर, वीरोदय नगर, सांगानेर, जयपुर

समारोह के मुख्य अतिथि
समाजगौरव श्री अशोक जी सुशीला जी पाटनी
आर.के.मार्बल्स, मदनंगज-किशनगढ़ (राज.)

आप सादर आमंत्रित है।

•

श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर (राज.)
प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण

शिरोमणि संरक्षक/ परामर्शक: जैन गौरव श्री अशोक पाटनी, मदनगंज-किशनगढ़ | शिरोमणि संरक्षक / सह परामर्शक: श्री तरुण काला, मुम्बई | अधिष्ठाता: डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर | निर्देशक: डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर

अध्यक्ष: शांति कुमार जैन (Retd. IPS) | कार्याध्यक्ष: प्रमोद जैन पहाड़िया | मानद मंत्री: सुरेश कुमार कासलीवाल | उपाध्यक्ष: उत्तम कुमार पाण्ड्या | उपाध्यक्ष: उत्तम चन्द पाटनी | उपाध्यक्ष: महावीर प्रसाद बज | उपाध्यक्ष: राकेश कुमार जैन | कोषाध्यक्ष: ऋषभ कुमार जैन | संयुक्त मंत्री: दर्शन कुमार जैन (बस्सी वाले)

कार्यकारिणी सदस्यगण
ज्ञानचन्द झांझरी | राकेश कुमार नेकीवाला | प्रदीप कुमार लुहाड़िया | चन्द्रमोहन पहाड़िया | शैलेन्द्र कुमार गोधा
मोहित कुमार राणा | अजय कुमार कटारिया | दिनेश कुमार जैन | संजय कुमार पाण्ड्या | विनोद छाबड़ा 'मोनू'

विशेष आमंत्रित सदस्य
पं. अरुण कुमार जैन | विजय कुमार पहाड़िया
अजय गंगवाल | मुकेश कुमार बैनाड़ा | नरेन्द्र कुमार बज

सन्तश्री सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय समिति

परामर्शक: श्रीमती सुशीला पाटनी, श्रीमती शान्ता पाटनी | अध्यक्ष: श्रीमती रेणु राणा | अधिष्ठात्री: श्रीमती शीला जैन (डोड्या) | निर्देशिका: डॉ. वन्दना जैन | गौरवाध्यक्ष: श्रीमती तारिका पाटनी | अध्यक्ष: श्रीमती रेणु राणा | उपाध्यक्ष: श्रीमती नीना पहाड़िया | उपाध्यक्ष: श्रीमती रजनी काला

डेंगू

एम एल जैन (मणि)

डेंगू एक वायरल संक्रमण से होने वाला बुखार है, जो मुख्यतः संक्रमित एडीज एजिप्टी मादा मच्छर के काटने से फैलता है। यह मच्छर प्रायः दिन में, विशेषकर सुबह और शाम के समय अधिक सक्रिय रहता है और संक्रमित व्यक्ति को काटने के बाद दूसरे व्यक्ति तक वायरस पहुंचा सकता है।

डेंगू कैसे फैलता है?

जब कोई मच्छर डेंगू से संक्रमित व्यक्ति को काटता है, तो वायरस मच्छर के शरीर में पहुंच जाता है। यही संक्रमित मच्छर जब किसी दूसरे व्यक्ति को काटता है, तो वायरस उसके शरीर में पहुंच सकता है। डेंगू सामान्यतः सीधे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता। इसका प्रमुख माध्यम संक्रमित मच्छर का काटना है। घर के आसपास जमा साफ पानी, जैसे कूलर, गमले, पुराने टायर, बाल्टी, पानी की टंकी आदि, एडीज मच्छरों के प्रजनन का स्थान बन सकते हैं।

डेंगू के लक्षण

संक्रमित मच्छर के काटने के लगभग 4 से 10 दिन बाद लक्षण शुरू हो सकते हैं। सामान्य लक्षणों में शामिल हैं:

तेज बुखार
तेज सिरदर्द
आंखों के पीछे दर्द
मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द
कमजोरी और थकान
जी मिचलाना या उल्टी
त्वचा पर लाल चकत्ते
कभी-कभी ग्रंथियों में सूजन

गंभीर डेंगू के चेतावनी संकेत

बुखार कम होने के बाद भी खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं माना जाता। निम्न में से कोई लक्षण दिखाई दे तो तुरंत चिकित्सक या अस्पताल से संपर्क करें:

तेज पेट दर्द
लगातार उल्टी
नाक या मसूड़ों से खून आना
उल्टी या मल में खून आना
तेज या कठिन सांस आना
बहुत अधिक कमजोरी, बेचैनी या सुस्ती
त्वचा ठंडी या पीली पड़ना
बहुत अधिक प्यास लगना

डेंगू की जांच

केवल लक्षणों के आधार पर डेंगू की निश्चित पहचान हमेशा संभव नहीं होती। चिकित्सक बीमारी की अवधि और मरीज की स्थिति के अनुसार जांच की सलाह दे सकता है, जैसे:

सीबीसी: हीमोग्लोबिन, हइउ और विशेष रूप से प्लेटलेट्स की निगरानी के लिए।

NS1 एंटीजन टेस्ट: बीमारी के शुरूआती दिनों में उपयोगी हो सकता है।

डेंगू एंटीबॉडी टेस्ट: बीमारी के चरण के अनुसार चिकित्सक इसकी सलाह दे सकता है।

आवश्यकता के अनुसार अन्य जांचें भी कराई जा सकती हैं। कौन-सी जांच करानी है, इसका निर्णय बीमारी को शुरू हुए कितने दिन हुए हैं और मरीज की स्थिति सहित अन्य परिस्थितियों के आधार पर चिकित्सक करता है।

महत्वपूर्ण: केवल प्लेटलेट्स की संख्या देखकर डेंगू की गंभीरता तय नहीं की जाती। मरीज की सामान्य स्थिति, रक्तस्राव, रक्तचाप, पेशाब की मात्रा और अन्य जांचों को भी ध्यान में रखा जाता है।

सावधानी और बचाव

घर के आसपास पानी जमा न होने दें। कूलर का पानी नियमित रूप से खाली करके साफ करें। पानी की टंकियों को ढककर रखें। गमले, पुराने टायर, डिब्बे और अन्य बर्तनों में पानी जमा न होने दें। दिन के समय भी मच्छरों से बचाव करें। पूरी बांह के कपड़े और शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें। मच्छरदानी, खिड़की की स्क्रीन और उपयुक्त मच्छर-रोधी साधनों का इस्तेमाल करें। डेंगू होने पर भी मच्छरों से बचाव करें, ताकि संक्रमित मच्छर के माध्यम से वायरस दूसरे लोगों तक न पहुंच सके।

डेंगू में सामान्य उपचार

डेंगू के लिए ऐसी कोई विशिष्ट एंटीवायरल दवा उपलब्ध नहीं है जो सामान्य रूप से वायरस को शरीर से समाप्त कर दे। उपचार मुख्यतः सहायक होता है, जिसमें पर्याप्त आराम, उचित मात्रा में तरल पदार्थ और चिकित्सकीय निगरानी महत्वपूर्ण हैं। बुखार या दर्द के लिए दवा चिकित्सक की सलाह से लें। ऐसी दवाओं से बचना चाहिए जो रक्तस्राव का जोखिम बढ़ा सकती हैं।

होम्योपैथिक उपचार के बारे में

डेंगू को ठीक करने या गंभीर डेंगू को रोकने में होम्योपैथिक दवाओं की प्रभावशीलता के समर्थन में विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए डेंगू के उपचार में होम्योपैथी को मुख्य उपचार का विकल्प नहीं बनाया जाना चाहिए और इसके कारण चिकित्सकीय जांच, तरल पदार्थों के प्रबंधन या आवश्यक अस्पताल की देखभाल में देरी नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति होम्योपैथिक दवा लेना चाहता है, तो वह इसे योग्य चिकित्सक की निगरानी में केवल सहायक रूप में लेने पर विचार कर सकता है, लेकिन डेंगू की नियमित चिकित्सकीय निगरानी और आवश्यक उपचार जारी रहना चाहिए। विशेष रूप से: तेज बुखार के साथ पेट दर्द, लगातार उल्टी, रक्तस्राव, सांस लेने में परेशानी या अत्यधिक कमजोरी जैसे लक्षण हों तो घरेलू या होम्योपैथिक उपचार पर निर्भर न रहें। तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें।

दिगंबर जैन समाज डडूका ने श्रेयांसनाथ निर्वाण दिवस को रक्षाबंधन पर्व के रूप में मनाया

डडूका. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन समाज डडूका द्वारा पार्श्वनाथ जिनालय में रक्षाबंधन पर्व श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः भगवान का जलाभिषेक कर समाजजनों ने एक-दूसरे को पर्व की शुभकामनाएं दीं। मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक तुभ्यम गांधी एवं रॉकी गांधी परिवार द्वारा किया गया। प्रथम अभिषेककर्ता के रूप में पीयूष सेठ, चिराग शाह एवं निवेश शाह ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेद शिखरजी से मोक्ष प्राप्त करने वाले जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ को अर्घ्य समर्पित किया गया। भगवान के निर्वाण की स्मृति में मुक्ति के प्रतीक निर्वाण लाडू शुभी, दिशांत, अशोक, सरिता कोठिया एवं समस्त कोठिया संयुक्त परिवार द्वारा समर्पित किया गया। कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष राजेश शाह, अजीत शाह, अशोक एम. शाह, रमनलाल शाह, मुकेश शाह एवं वस्तुपाल शाह सहित समाजजन उपस्थित रहे। मंत्रोच्चार राजेंद्र कोठिया ने किया। यह जानकारी समाज प्रवक्ता राकेश शाह ने दी।

राजनीति

लड़कियों को फैसले लेने की आजादी मिलनी चाहिए

गांवों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर तस्वीर पहले की तुलना में बदली है। कुछ दशक पहले जहां गिने-चुने घरों की लड़कियों का स्कूल जाना ही बड़ी बात माना जाता था, वहीं अब अधिकांश ग्रामीण परिवारों की किशोरियां स्कूल जा रही हैं। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के बाद बड़ी संख्या में लड़कियां 12वीं तक पढ़ रही हैं और कुछ उच्च शिक्षा के लिए गांव से बाहर भी जा रही हैं लेकिन सवाल यह है कि क्या स्कूल की दहलीज तक पहुंचना ही लड़कियों की आजादी का अर्थ पूरा कर देता है? क्या किताबें हाथ में आने के बाद उनके जीवन के फैसले भी उनके हाथ में आ जाते हैं? इन सवालों का जवाब अभी पूरी तरह हां में नहीं दिया जा सकता। ग्रामीण समाज में लड़कियों के लिए शिक्षा के दरवाजे धीरे-धीरे खुले हैं, लेकिन निर्णय लेने की खिड़की अब भी काफी हद तक बंद है। लड़की क्या पढ़ेगी, कितना पढ़ेगी, कब उसकी शादी होगी, किससे शादी करेगी, क्या पहनेगी और कहां जाएगी–इन सवालों के जवाब अक्सर लड़की से अधिक परिवार और समाज तय करते हैं। यानी शिक्षा का स्तर बढ़ा है, लेकिन निर्णय लेने का अधिकार उसी गति से नहीं बढ़ पाया है। लूणकरणसर ब्लॉक से करीब 20 किमी दूर कुजटी गांव इस बदलाव और उसकी सीमाओं का उदाहरण है। करीब 2,500 की आबादी वाले इस गांव में पुरुषों की साक्षरता दर 72 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर केवल 40 प्रतिशत है। लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के मामले में अभी लंबी दूरी तय करनी बाकी है। फिर भी बदलाव की शुरूआत हो चुकी है। गांव की 21 वर्षीय कविता (नाम परिवर्तित) इसी बदलती सोच की आवाज हैं। उनका कहना है कि कई परिवारों में आज भी यह धारणा है कि लड़की को ज्यादा पढ़ाने से वह 'बिगड़' जाएगी। परिवारों को डर रहता है कि पढ़ी-लिखी लड़की आगे चलकर अपनी पसंद से शादी कर सकती है और इससे परिवार की 'इज्जत' मिट्टी में मिल जाएगी। कविता का सवाल इस सोच की बुनियाद को चुनौती देता है अगर लड़की अपनी पसंद से शादी करे तो परिवार की इज्जत कैसे मिट जाती है, जबकि लड़का अपनी पसंद से शादी करे तो वही इज्जत क्यों नहीं मिटती? यह केवल विवाह का सवाल नहीं, बल्कि उस दोहरे सामाजिक मापदंड पर सवाल है जिसमें लड़के के लिए अधिकार और लड़की के लिए वही निर्णय परिवार की प्रतिष्ठा पर हमला माना जाता है।

संपादकीय

पड़ोसी के संकट में सच्चे मित्र का परिचय

नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में हाल में आई भीषण प्राकृतिक आपदा ने एक बार फिर याद दिलाया है कि हिमालयी क्षेत्र में प्रकृति की विभीषिका कितनी विनाशकारी हो सकती है। भोटेकोशी और त्रिशूली नदी के मार्ग में ग्लेशियल अवलांच से उत्पन्न अचानक आई बाढ़ ने रसुवा, नुवाकोट और आसपास के जिलों में भारी तबाही मचाई। पुल बह गए, सड़कें क्षतिग्रस्त हो गईं, जलविद्युत परियोजनाओं को नुकसान पहुंचा और सैकड़ों घर मलबे में दब गए। 28 अगस्त तक मृतकों की संख्या 469 तक पहुंचने और 1,400 से अधिक लोगों के लापता होने की सूचना है। इनमें बड़ी संख्या भारतीय नागरिकों की भी है, जिनमें त्रिशूली-1 जलविद्युत परियोजना के कर्मचारी और कैलाश-मानसरोवर यात्रा पर गए तीर्थयात्री शामिल हैं। इस गंभीर संकट के बीच भारत ने जिस तत्परता और संवेदनशीलता के साथ प्रतिक्रिया दी, वह पड़ोसी धर्म और मानवीय जिम्मेदारी का उल्लेखनीय उदाहरण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह से बात कर संवेदना व्यक्त की और हरसंभव मानवीय सहायता का आश्वासन दिया। विदेश मंत्री एस. जयशंकर और विदेश मंत्रालय ने भी नेपाली अधिकारियों के साथ लगातार संपर्क बनाए रखा। भारत ने राहत अभियान में तत्काल आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई। भारतीय वायुसेना के सी-130जे विमान के माध्यम से पहले ही दिन 10 टन मानवीय सहायता एवं आपदा राहत सामग्री काठमांडू पहुंचाई गई। इसमें अस्थायी आश्रय सामग्री, कंबल, स्वच्छता किट, सोलर लैंप और आवश्यक दवाएं शामिल थीं। इसके अगले दिन 37.5 टन अतिरिक्त राहत सामग्री, दवाइयां और खाद्य पैकेट भेजे गए। इस प्रकार दो सैन्य परिवहन विमानों के माध्यम से कुल 47.5 टन राहत सामग्री नेपाल पहुंचाई जा चुकी थी। भारतीय राजदूत नवीन श्रीवास्तव ने राहत सामग्री नेपाली मंत्रियों को सौंपते हुए भारत की प्रतिबद्धता दोहराई कि वह संकट की इस घड़ी में नेपाल के साथ खड़ा है। भारत की भूमिका केवल राहत सामग्री भेजने तक सीमित नहीं रही। भारतीय नागरिकों की खोज और सुरक्षित निकासी के लिए भी सक्रिय प्रयास किए गए। 84 भारतीय नागरिकों को बचाया जा चुका था, जिनमें परियोजना के 63 कर्मचारी और तमिलनाडु के 21 तीर्थयात्री शामिल थे। तिब्बत क्षेत्र में फंसे करीब 200 भारतीयों के लिए भी संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय जारी रहा। विदेश मंत्रालय ने नियंत्रण कक्ष स्थापित किया और भारतीय दूतावास ने हेल्पलाइन के माध्यम से प्रभावित लोगों तथा उनके परिजनों को सहायता उपलब्ध कराई। यह त्रासदी भारत-नेपाल संबंधों की गहराई को भी रेखांकित करती है। दोनों देशों के बीच केवल भौगोलिक निकटता ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध भी हैं। ऐसे संकट के समय भारत की त्वरित सहायता ''नेबरहुड फर्स्ट'' नीति को व्यवहार में प्रतिबिंबित करती है। इससे पहले भी भूकंप और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भारत नेपाल के साथ खड़ा रहा है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

अवैध घुसपैठ पर सख्ती जरूरी

कांतिलाल मांडोत

भारत की सुरक्षा और नागरिकता से जुड़ा प्रश्न आज पहले से अधिक गंभीर और संवेदनशील हो गया है। बॉम्बे हाईकोर्ट की हालिया टिप्पणी ने इस बहस को नई दिशा दी है। अदालत ने फर्जी आधार और अन्य दस्तावेजों के माध्यम से पहचान स्थापित करने वाले विदेशी नागरिकों की पहचान कर उन्हें प्राथमिकता के आधार पर निर्वासित करने तथा केंद्र और राज्य की एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का यह कहना कि भारत कोई धर्मशाला नहीं है और देश में रहने का अधिकार केवल वैध नागरिकों को है, सरकार की उस नीति को स्पष्ट करता है जिसमें अवैध घुसपैठ को गंभीर चुनौती माना जा रहा है। इस मुद्दे को केवल कुछ विदेशी नागरिकों के फर्जी दस्तावेज हासिल करने तक सीमित करके नहीं देखा जाना चाहिए। असली चिंता उस व्यवस्था की कमजोरियों को लेकर है, जिसके कारण कोई व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान छिपाकर आधार, पैन, शैक्षणिक प्रमाणपत्र या यहां तक कि भारतीय पासपोर्ट जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज हासिल कर लेता है। यदि ऐसा संभव है तो यह केवल दस्तावेजी धोखाधड़ी नहीं, बल्कि प्रशासनिक और सुरक्षा व्यवस्था में गंभीर सेंध का संकेत है। बॉम्बे हाईकोर्ट के समक्ष आए मामले में अफगानिस्तान के एक नागरिक के बारे में बताया गया कि वीजा अवधि समाप्त होने के बाद भी वह भारत में रहा और कथित रूप से दूसरी पहचान के नाम पर आधार, पैन सहित अन्य दस्तावेज हासिल किए। यदि न्यायिक प्रक्रिया में सामने आए तथ्य सही हैं, तो यह जांच जरूरी है कि संबंधित विभागों ने दस्तावेज जारी करते समय आवश्यक सत्यापन क्यों नहीं किया। एक ही व्यक्ति की अलग पहचान सरकारी रिकॉर्ड में स्थापित हो जाना व्यवस्था की कमजोर कड़ियों को उजागर करता है। ऐसे मामलों में सबसे बड़ी आवश्यकता विभिन्न एजेंसियों के बीच प्रभावी तालमेल की है। आव्रजन विभाग, पुलिस, सीमा सुरक्षा बल, खुफिया एजेंसियों और पहचान संबंधी विभागों के रिकॉर्ड आपस में समन्वित होने चाहिए। किसी विदेशी नागरिक का वीजा समाप्त होने, निर्धारित अवधि से अधिक ठहरने या दस्तावेजों में संदिग्ध जानकारी मिलने पर संबंधित एजेंसियों को तत्काल सूचना मिलनी चाहिए। तकनीक के दौर में सूचनाओं का अलग-अलग विभागों में बिखरा रहना सुरक्षा के लिए गंभीर कमजोरी है। पहचान संबंधी दस्तावेज जारी करने की प्रक्रिया में भी विदेशी नागरिकों के लिए सत्यापन को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। आधार पहचान का माध्यम है, नागरिकता का प्रमाण नहीं। इस अंतर को प्रशासनिक स्तर पर स्पष्ट रखना आवश्यक है। भारतीय पासपोर्ट जैसे संवेदनशील दस्तावेज के मामले में तो सत्यापन और जवाबदेही की व्यवस्था और मजबूत होनी चाहिए। यदि फर्जी पहचान के आधार पर दस्तावेज जारी हुआ है, तो केवल लाभार्थी पर कार्रवाई पर्याप्त नहीं; पूरे नेटवर्क और किसी संभावित मिलीभगत या लापरवाही की भी जांच होनी चाहिए। अवैध घुसपैठ रोकना राज्य की स्वाभाविक जिम्मेदारी है। सीमाओं की सुरक्षा के साथ देश में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों की पहचान और कानून के अनुसार कार्रवाई भी आवश्यक है। लेकिन कठोरता का अर्थ मनमानी नहीं हो सकता। किसी व्यक्ति को केवल संदेह के आधार पर विदेशी घोषित करना या निर्दोष भारतीय नागरिक को प्रशासनिक त्रुटि के कारण उसके अधिकारों से वंचित करना लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप नहीं होगा।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप विराट की सदस्याओं ने सैनिकों को बांधी राखी

जयपुर. शाबाश इंडिया। देश की सेवा के प्रति समर्पित और अपने परिवार से दूर रहने वाले सैनिकों के साथ रक्षाबंधन पर्व मनाते हुए दिगंबर जैन सोशल ग्रुप विराट एवं लायंस क्लब जयपुर सेंट्रल स्पाइन की सदस्याओं ने सैनिकों को राखी बांधी। इस अवसर पर सैनिकों को मिठाई खिलाकर उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की गई। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप विराट के फाउंडर बसंत जैन ने बताया कि रक्षाबंधन भाई-बहन के बीच प्रेम, स्नेह और रक्षा-संकल्प का पवित्र पर्व है। कई सैनिक देश की सुरक्षा के लिए अपने परिवार से दूर रहते हैं और उनकी बहनें उनके साथ रक्षाबंधन नहीं मना पातीं। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया, ताकि सैनिकों को इस पवित्र पर्व पर अपने परिवार की कमी महसूस न हो। मुख्य आयोजक लायन एवं लियो क्लब जयपुर सेंट्रल स्पाइन के बसंत जलेवा ने बताया कि कार्यक्रम में विराट ग्रुप की निर्मला जैन, अंजना जैन, कोमल जैन, नीरू सिद्धा, प्रकृति फाउंडेशन की प्रियंका गोयल, पक्की भायली की लता तिवाड़ी, लायंस क्लब की योगिता जलेवा, संयोगिता मानक, अर्चना जैन, सोनिया अग्रवाल, एनी बंसल, शांता श्रीवास्तव सहित अन्य सदस्याओं ने सैनिकों को राखी बांधी। कार्यक्रम के दौरान सभी सदस्याओं ने सैन्य अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सैनिकों के साथ रक्षाबंधन मनाने का यह अनुभव उनके जीवन का अविस्मरणीय अवसर रहा। देश की रक्षा में दिन-रात जुटे सैनिकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कार्यक्रम भावपूर्ण माहौल में संपन्न हुआ।

रक्षाबंधन पर आचार्य पुलकसागर ने दिलाया बहनों के साथ परिवार, धर्म एवं राष्ट्र रक्षा का संकल्प

रक्षाबंधन पर भाई से मांगें वचन, हर बहन को मेरे समान इज्जत व सम्मान देंगे: आचार्य पुलकसागर

श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्य ससंघ की पिच्छिकाओं पर रक्षा सूत्र बांध लिया मुनि रक्षा का संकल्प

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

रक्षाबंधन केवल बहन की रक्षा का वचन देने का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमें संदेश देता है कि हम अपनी बहन के साथ-साथ हर बहन-बेटी की रक्षा का संकल्प लें। बहनें राखी बांधते समय भाई से वचन मांगें कि जैसा सम्मान वह उन्हें प्रदान करता है, वैसा ही सम्मान घर के बाहर भी हर बहन को देगा। रक्षाबंधन पर हमें अपने परिवार, धर्म, समाज एवं राष्ट्र की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए। अपने धर्मस्थलों की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए। सनातन धर्म और जैन धर्म को मानने वाले एक-दूसरे के तीर्थस्थलों एवं धार्मिक स्थलों की रक्षा और सम्मान करने का संकल्प लें। इन दोनों धर्मों में से एक भी मिट गया तो भारत से आध्यात्मिकता मिट जाएगी। ये विचार भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्र संत आचार्य मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ने श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से चित्रकूटधाम में आयोजित ज्ञान गंगा महोत्सव के तहत शुक्रवार को रक्षाबंधन महोत्सव के अवसर पर प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि बेटियां बेटों के समान स्वतंत्रता से घूमे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे स्वच्छंद हो जाएं। नारी को मयार्दा में रहते हुए स्वतंत्र जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। हमारी बेटियां मिस वर्ल्ड या मिस यूनिवर्स बनने की बजाय सीता, अनुसूया और चंदनबाला जैसी सती बनने का सपना देखें। तीर्थंकरों और महापुरुषों का सपना है कि इस देश में वासना और अश्लीलता नहीं, बल्कि साधना की महक फैले। आचार्यश्री ने कहा कि आज राखी बांधते समय भाई से एक वचन अवश्य लें कि वह देश की हर बेटी को वही इज्जत और प्यार देगा, जो वह अपनी बहन को देता है और किसी भी बहन के साथ छेड़छाड़ नहीं करेगा। हमें दस सिर वाले रावण से नहीं, बल्कि उस रावण से डरना है जो हर कहीं घूमता मिल जाएगा। उसकी आंखें भले ही दो हों, लेकिन नजर कई पर होती है। रावण को जलाना आसान है, लेकिन राम बनना मुश्किल है। आचार्य पुलकसागर ने कहा कि देश की बेटियों की रक्षा करनी है और निर्भया कांड जैसी घटनाओं को रोकना है तो कानून को सख्त बनाना होगा तथा बलात्कार एवं दुष्कर्म जैसे जघन्य अपराध करने वालों के खिलाफ कठोरतम दंड का प्रावधान होना चाहिए। हमें दुष्कर्म करने वाले दूसरों के बेटों के लिए फांसी की मांग करने और ऐसा कृत्य करने वाले अपने बेटे को बचाने की दोहरी सोच का त्याग करना होगा। रक्षाबंधन पर यह संकल्प लें कि यदि हमारी औलाद गलत कार्य करेगी तो उसके लिए भी वही सजा मांगेंगे, जो दूसरों के लिए मांगते हैं। जब तक ऐसा नहीं करेंगे, हमारी बेटियां सुरक्षित नहीं होंगी। जो आज दूसरों की बेटी के साथ हो रहा है, वह कल आपकी बेटी के साथ भी हो सकता है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन पर्व इतिहास की उस घटना की भी याद दिलाता है, जब हस्तिनापुर में राजा बलि ने 700 मुनियों को प्रताड़ित कर बंदी बना लिया था और मुनियों पर आए घोर उपसर्ग से विष्णुकुमार मुनि ने वामन रूप धारण कर उनकी रक्षा की थी। हमें इस दिन मुनि रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि कई लोग हम मुनियों को भी पागल कहते हैं तो वे गलत नहीं कहते। पागल वह होता है जो पाप को गलाने में लगा होता है। संत पाप को गलाते हैं और श्रावक पापों में गलता है। उन्होंने कहा कि यह संकल्प लें कि जितना प्रेम हम अपने भाई-बहन से करते हैं, उतना ही प्रेम इस देश की रक्षा करने वाले सैनिकों, धर्म, समाज एवं राष्ट्र से भी करेंगे।

पिच्छिकाओं पर बांधा रक्षा सूत्र

प्रवचन समाप्ति पर आचार्य पुलकसागर महाराज की पिच्छिका पर प्रथम राखी के रूप में स्वर्ण राखी बांधने का पुण्यार्जन पारसमल, महावीर एवं राहुल चौधरी परिवार ने प्राप्त किया। आचार्यश्री की सांसारिक बहन मंजूदेवी एवं बहनोई शिरीष जैन ने भी उनकी पिच्छिका पर रक्षा सूत्र बांधा। पुण्यार्जक चौधरी परिवार ने आचार्य ससंघ की सभी पिच्छिकाओं पर रक्षा सूत्र बांधने का सौभाग्य प्राप्त किया। पुण्यार्जक चौधरी परिवार का स्वागत पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी, संयोजक मनीष शाह, सह-संयोजक लोकेश अजमेरा सहित अन्य पदाधिकारियों ने किया। प्रवचन के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, आचार्यश्री के पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य दिलीप, प्रवीण, नवीन एवं राहुल चौधरी परिवार ने प्राप्त किया। सौभाग्यशाली परिवारों एवं अतिथियों का स्वागत श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति द्वारा किया गया। बालिका मंडल की सदस्यों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप गुलाबीनगर का "सावन की मस्ती मिलन" कार्यक्रम संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप गुलाबीनगर, जयपुर की ओर से 23 अगस्त 2026 को ''सावन की मस्ती मिलन समारोह'' का आयोजन कान्हा-तनसुख, वैशाली नगर में उत्साह एवं उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम के संयोजक भागचंद मीना जैन ने सदस्यों का तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया। कार्यक्रम में ग्रुप के संस्थापक अनिल जैन, संरक्षक सुरेंद्र मर्दुला पांड्या, अध्यक्ष सुशीला विनोद बड़जात्या, निवर्तमान अध्यक्ष सुनील सुमन बज, सचिव महावीर मुन्नादेवी पांड्या, कोषाध्यक्ष निर्मल उषा सेठी, उपाध्यक्ष विनय अजमेरा, राजेंद्र छाबड़ा सहित बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित रहे। संयोजकों द्वारा ''सावन की मस्ती'' थीम पर मनोरंजक हाउजी का आयोजन किया गया। इसके साथ ही ग्रुप की ओर से एक अन्य निःशुल्क हाउजी भी खिलाई गई, जिसमें सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर महावीर-संतोष चांदवाड़, संजय-सुनीता कासलीवाल, ओमप्रकाश-उषा जैन, विनोद-किरण झांझरी, राजेंद्र-मंजू कासलीवाल, विनोद-सुशीला बड़जात्या, चंद्रप्रकाश-चंदा छाबड़ा तथा नरेंद्र-निर्मला सेठी की वैवाहिक वर्षगांठ पर सभी सदस्यों ने उन्हें शुभकामनाएं एवं बधाई दी। कार्यक्रम में ग्रुप के सदस्यों को टूर प्रतिनिधि द्वारा लक्षद्वीप क्रूज यात्रा (4 रात्रि, 5 दिवसीय) एवं सीधे लक्षद्वीप की हवाई यात्रा (6 रात्रि, 7 दिवसीय) के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। ग्रुप अध्यक्ष सुशीला बड़जात्या ने सभी सदस्यों से 25 अगस्त को जैन भारती ग्रुप द्वारा गायत्री जैन मंदिर में आयोजित 64 ऋद्धि-सिद्धि मंत्रों एवं दीपकों से युक्त वर्धमान स्तोत्र कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित रहने का आग्रह किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए अध्यक्ष ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम के सुंदर संचालन के लिए संयोजक भागचंद मीना जैन का धन्यवाद किया। अंत में सभी सदस्यों ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया।

राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ: संविधान सभा व एडवाइजरी बोर्ड की बैठक रविवार को

जयपुर. शाबाश इंडिया

नवगठित राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ की संविधान सभा एवं एडवाइजरी बोर्ड की प्रथम महत्वपूर्ण बैठक रविवार को दोपहर 1 बजे टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित की जाएगी। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार प्रवीणचंद छावड़ा करेंगे। बैठक में संगठन की आगामी कार्ययोजना, संविधान को अंतिम रूप देने तथा संगठन को विधिवत स्वरूप प्रदान करने से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाएंगे। संगठन के संयोजक डॉ. अखिल बंसल ने बताया कि राजस्थान के अधिस्वीकृत एवं मान्यता प्राप्त पत्रकारों के हितों, सम्मान, अधिकारों तथा पत्रकारिता की गरिमा की रक्षा के उद्देश्य से गठित इस संगठन को मजबूत एवं सुव्यवस्थित स्वरूप देने की दिशा में यह बैठक महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने बताया कि बैठक में राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ के संविधान के अंतिम प्रारूप पर विस्तृत विचार-विमर्श कर उसका अनुमोदन किया जाएगा। संविधान में संगठन के उद्देश्यों, सदस्यता, पदाधिकारियों की जिम्मेदारियों, एडवाइजरी बोर्ड, कार्यसमिति तथा जिला स्तर पर संगठनात्मक ढांचे सहित विभिन्न प्रावधानों को अंतिम रूप दिया जाएगा। बैठक में संगठन के पंजीयन की विधिवत कार्यवाही शुरू करने, आवश्यक दस्तावेज तैयार करने तथा पंजीयन के स्वरूप एवं प्रक्रिया पर भी निर्णय लिया जाएगा। इसके साथ ही कार्यसमिति के गठन एवं पदाधिकारियों के मनोनयन से संबंधित प्रस्तावों पर भी विचार-विमर्श किया जाएगा। डॉ. बंसल ने बताया कि संगठन को केवल एक औपचारिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि प्रदेश के अधिस्वीकृत पत्रकारों के साझा मंच और मजबूत प्रतिनिधि संगठन के रूप में विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। संगठन पत्रकारों की समस्याओं को सामूहिक रूप से उठाने, उनके अधिकारों एवं सम्मान की रक्षा करने तथा पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न विषयों पर सकारात्मक पहल करने के लिए कार्य करेगा। बैठक में एडवाइजरी बोर्ड एवं संविधान सभा के लगभग 31 सदस्य शामिल होंगे। संविधान सभा के सदस्यों द्वारा संविधान पर विचार-विमर्श एवं अनुमोदन के साथ संगठन की भावी दिशा तय करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए जाएंगे। बैठक को संगठन के गठन की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। संविधान के अनुमोदन एवं संगठनात्मक ढांचे को अंतिम रूप दिए जाने के बाद राजस्थान अधिस्वीकृत पत्रकार संघ की आगामी गतिविधियों को अधिक व्यवस्थित एवं सक्रिय रूप से संचालित करने की योजना है।

कर्तृत्व का अभिमान ही व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

शांतिभवन की धर्मसभा में कहा—अपना पुरुषार्थ याद और उपकार भूल गए तो बढ़ने लगता है ''मैं''; सेवा में जगाएं मां जैसा निकर्तृत्व भाव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन कोई दूसरा नहीं, बल्कि उसके अपने कर्तृत्व का अभिमान है। ''मैंने किया, मेरे कारण हुआ'' का यही भाव श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य की आंतरिक पवित्रता को भी कलुषित कर देता है। कर्तृत्व-अभिमान प्रारंभ में अपने किए का एहसान जताता है, फिर प्रशंसा की अपेक्षा करता है और उसके बाद सम्मान, पद तथा अंततः अधिकार व सत्ता की आकांक्षा तक पहुंच जाता है। 'मैं' का विस्तार जितना बढ़ता है, सेवा की निष्कामता उतनी ही सिकुड़ती जाती है। ये विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने रक्षाबंधन के पावन पर्व पर शांतिभवन में आयोजित धर्मसभा में श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं देते हुए व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने कहा कि मां का निकर्तृत्व भाव अनुकरणीय है। वह संतान के लिए पीड़ा सहती है, रातें जागती है, अपने सुख का त्याग करती है और जीवन का बड़ा हिस्सा उसके निर्माण में समर्पित कर देती है, फिर भी अपने त्याग का लेखा प्रस्तुत नहीं करती। मां करती बहुत है, पर जताती नहीं; देती बहुत है, पर गिनाती नहीं। कर्तृत्व का अभिमान कार्य का दूषण है और मां का निकर्तृत्व भाव उसका भूषण है। नेपाल-चीन सीमा क्षेत्र में आई विनाशकारी प्राकृतिक आपदा और त्रासदी का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने प्रभावित परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की तथा दिवंगतों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कामना की कि ऐसी विपदा किसी भी प्राणी के जीवन में न आए तथा जो लोग विकट परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, उन्हें उससे उबरने का सामर्थ्य, सहयोग और संबल प्राप्त हो। उन्होंने कहा कि हम सुरक्षित बैठकर आज का दिन देख पा रहे हैं तो इसे केवल अपने पुरुषार्थ की उपलब्धि मान लेना भी भूल है। जीवन की प्रत्येक उपलब्धि के पीछे पुण्य-संयोग, बड़ों का आशीर्वाद, गुरुजनों की कृपा, परिवार का स्नेह, समाज का सहयोग, धर्मसंघ का संरक्षण और असंख्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष योगदान जुड़े होते हैं। मनुष्य को अपना किया हुआ बहुत शीघ्र स्मरण हो जाता है, किंतु अपने ऊपर हुए उपकार उतनी ही सहजता से विस्मृत हो जाते हैं। जहां पुरुषार्थ का स्मरण रह जाए और उपकारों का बोध मिट जाए, वहीं से 'मैं' का विस्तार और कृतज्ञता का क्षरण प्रारंभ होता है। कथा के माध्यम से युवाचार्यश्री ने बताया कि निरंतर अभ्यास से एक साधक ने पहले तिनका, फिर लकड़ी और अंततः तलवार तक जीभ पर संतुलित करने की क्षमता विकसित कर ली। जब उससे पूछा गया कि यह कला कहां से सीखी, तो उसने प्रेरणा के मूल स्रोत को भुलाकर पूरी उपलब्धि को अपनी साधना का परिणाम बता दिया। कथा के अनुसार, उसी क्षण उसका संतुलन बिगड़ गया। अभ्यास ने उसे ऊंचाई दी, लेकिन 'मैं' ने उसका संतुलन छीन लिया। पुरुषार्थ उन्नति का साधन है, जबकि पुरुषार्थ का अभिमान पतन का कारण बनता है। युवाचार्यश्री ने कहा कि कर्तृत्व-अभिमान का पहला रूप एहसान जताने में दिखाई देता है। व्यक्ति कहता है ''मैंने इतना किया, मेरे कारण यह हुआ, मेरे सहयोग से कार्य बना।'' उसे अपना दिया हुआ स्मरण रहता है, लेकिन जो उसे मिला, उसका बोध धूमिल पड़ जाता है। संघ, समाज और परिवार के लिए किया गया कार्य किसी पर उपकार नहीं, बल्कि अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह है। जिस क्षण सेवा में हिसाब प्रवेश करता है, उसी क्षण उसकी निष्कामता क्षीण होने लगती है। उन्होंने कहा कि दूध से भरे पूरे भगोने को फाड़ने के लिए नमक की बड़ी मात्रा नहीं चाहिए, एक छोटी-सी डली पर्याप्त है। उसी प्रकार अच्छे से अच्छा कार्य भी मैंने किया के एक अहंभाव से विकृत हो सकता है। कार्य कितना बड़ा है, इससे पहले उसके पीछे की भावना कितनी निर्मल है, यह देखना आवश्यक है। कर्म की ऊंचाई उसके आकार से नहीं, बल्कि उसके पीछे की अंतःशुद्धि से निर्धारित होती है। युवाचार्यश्री ने कहा कि कर्तृत्व-अभिमान केवल मैंने किया पर समाप्त नहीं होता। पहले मन प्रशंसा चाहता है—चार लोग नाम लें, सराहना करें, चर्चा हो। प्रशंसा मिलने पर सम्मान की आकांक्षा जागती है, सम्मान के बाद पद और पद के बाद अधिकार। अंततः व्यक्ति चाहता है कि निर्णय भी उसकी इच्छा के अनुरूप हों। मैंने काम किया से शुरू हुआ अहंकार जब मेरे बिना कुछ नहीं होना चाहिए तक पहुंच जाए, तब सेवा का स्थान सत्ता-भाव ग्रहण करने लगता है। उन्होंने कहा कि सेवा के बदले प्रशंसा की अपेक्षा भी उसके मूल्य की मांग करने जैसी है। नौकरी में श्रम के बदले वेतन मिलता है, किंतु निष्काम सेवा यदि तालियों, प्रशंसा और सार्वजनिक स्वीकृति पर निर्भर हो जाए तो उसका आध्यात्मिक मूल्य क्षीण होने लगता है। सेवा का सौंदर्य प्रसिद्धि में नहीं, बल्कि प्रतिफल-विहीन समर्पण में है। युवाचार्यश्री ने कहा कि संघ, समाज या संस्था कोई व्यापारिक साझेदारी नहीं है कि जितना कार्य किया, उतनी हिस्सेदारी मांगी जाए। पद उत्तरदायित्व निभाने का माध्यम है, प्रतिष्ठा का अलंकरण नहीं। किसी व्यक्ति के परिचय में कितने पद लिखे हैं, इससे उसकी सेवा की ऊंचाई निर्धारित नहीं होती। पद बढ़ते जाएं और समर्पण घटता जाए तो परिचय विशाल हो सकता है, किंतु व्यक्तित्व विराट नहीं होता। मां के निकर्तृत्व भाव को आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा कि मां गर्भ से लेकर संतान के पालन-पोषण तक अनगिनत कष्ट सहती है। रात-रात भर जागती है, अपना सुख त्यागती है, स्वयं को पीछे रखकर संतान के भविष्य का निर्माण करती है, फिर भी कभी अपने त्याग का बहीखाता नहीं खोलती। मां करती बहुत है, पर जताती नहीं; देती बहुत है, पर गिनाती नहीं; त्याग करती है, पर प्रतिफल नहीं मांगती। यही निकर्तृत्व की निर्मलता है। उन्होंने कहा कि यही मातृत्व भाव संघ, समाज, परिवार और शासन के लिए किए जाने वाले कार्य में उतर जाए तो सेवा का स्वरूप ही बदल सकता है। मां के जीवन में कर्तृत्व है, लेकिन कर्तृत्व का अभिमान नहीं। वह स्वयं को प्रतिष्ठित करने के बजाय संतान को आगे बढ़ाती है। अहंकार कहता है—मेरे कारण हुआ, जबकि निकर्तृत्व भाव कहता है—यह मेरा कर्तव्य था। यही दोनों दृष्टियों के बीच का अंतर है। युवाचार्यश्री ने कहा कि सेवा की वास्तविक परीक्षा मंच की सराहना में नहीं, बल्कि अंतर्मन की निर्मलता में होती है। कार्य आपका हो, श्रेय किसी और को मिल जाए और फिर भी भीतर प्रसन्नता अक्षुण्ण बनी रहे, यही निष्कामता की प्रामाणिक कसौटी है। प्रशंसा न मिले, सम्मान न मिले, पद न मिले, फिर भी समर्पण में क्षीणता न आए, तभी कर्तव्य की पवित्रता सुरक्षित रहती है। नाम पीछे रह जाए और कार्य आगे बढ़ता रहे, यहीं सेवा अहंकार से ऊपर उठती है। युवाचार्यश्री ने कहा कि मनुष्य को कर्तृत्व से नहीं, बल्कि उसके भीतर जन्म लेने वाले अहंभाव से सावधान रहना है। पुरुषार्थ करें, उत्तरदायित्व निभाएं, संघ और समाज के लिए सक्रिय रहें, किंतु किए हुए कार्य को अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण न बनने दें। कर्तृत्व रहे, पर कर्ता होने का अभिमान न रहे। मैंने किया का भाव विलीन होकर यह मेरा कर्तव्य था की चेतना में परिणत हो जाए, तभी सेवा साधना, समर्पण और आत्मपरिष्कार का स्वरूप ग्रहण करती है। साध्वी सुप्रभाजी ने कहा कि सम्यक्त्व त्याग की नींव और जीवन का अनमोल रत्न है। आनंद अनुभूति वर्षावास शांतिभवन के मंत्री नवरतनमल भलावत एवं प्रकाश पीपाड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि सिद्धितप एवं निरंतर तप आराधना के क्रम में तपस्वियों ने 5, 4, 3 एवं 1 उपवास तथा आयंबिल तप के प्रत्याख्यान युवाचार्यश्री से ग्रहण किए। उन्होंने बताया कि युवाचार्यश्री एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में 4 सितंबर को जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष प्रवचन तथा विचित्र वेशभूषा कार्यक्रम आयोजित होगा। वहीं, 5 सितंबर को मेवाड़ केसरी मोहनलालजी महाराज का पुण्य स्मृति दिवस एकासन, सामायिक एवं गुणगान के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा।

सिद्ध क्षेत्र फलहोडी बड़ागांव में भव्य जिन वेदिका का शिलान्यास

अस्वस्थ एवं वृद्धजनों को अंतिम समय तक मिलें जिनबिंब के दर्शन : पं. सुरेंद्र कुमार सिंघई

घुवारा. शाबाश इंडिया

(भरत सेठ घुवारा) विश्व प्रसिद्ध जैन सिद्ध क्षेत्र फलहोडी बड़ागांव (घसान) में सप्तशतक मुनिराज रक्षा दिवस, भगवान श्रेयांश नाथ स्वामी के निर्वाण दिवस एवं रक्षाबंधन पर्व के पावन अवसर पर भव्य श्री मज्जिनेन्द्र वेदिका का शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया। सिद्ध क्षेत्र के मुख्य द्वार के सामने पं. सुरेंद्र कुमार सिंघई परिवार की ओर से अस्वस्थ एवं वृद्धजनों को प्रतिदिन जिनबिंब के दर्शन सुलभ कराने की भावना से श्री 1008 मुनि सुब्रतनाथ जिनालय का निर्माण कराया जा रहा है। इसी मंदिर में जिन वेदिका के शिलान्यास का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिन वेदिका का शिलान्यास इंजी. संजीव, इंजी. सुभि (बेंगलुरु), इंजी. मुदित जैन (मुंबई), इंजी. अंकुर एवं अंकित जैन (पुणे) ने किया। वहीं आधारशिला इंजी. समकित सिंघई ने रखी। मंच संचालन राकेश केसरिया एवं विधानाचार्य गगनदीप फणींद (पार्षद) ने किया। समारोह में क्षेत्र के सैकड़ों गांवों से बड़ी संख्या में समाजजन शामिल हुए। स्थानीय समाज एवं प्रबंधकारिणी समिति के सहयोग से आयोजन हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।

वृद्ध एवं अस्वस्थजनों के लिए मंदिर निर्माण की भावना

प्रतिष्ठाचार्य पं. सुरेंद्र कुमार सिंघई ने कहा कि नवीन मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं थी, लेकिन अस्वस्थ एवं वृद्धजन अंतिम समय में पहाड़ी पर स्थित मंदिर तक नहीं पहुंच पाते थे। ऐसे श्रद्धालु अंतिम समय तक जिनबिंब के दर्शन कर सकें, इसी भावना से सीमित स्थान में छोटे मंदिर का निर्माण कराया जा रहा है। उन्होंने आगामी 6 से 12 दिसंबर 2026 तक आयोजित होने वाले भगवान नेमिनाथ के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का उल्लेख करते हुए नगरवासियों एवं क्षेत्रीय जैन समाज सहित समस्त जनसमुदाय से मंदिर निर्माण एवं प्रतिष्ठा समारोह में अपना अमूल्य समय और सहयोग देने का आह्वान किया।

विधायक का नागरिक सम्मान

सकल दिगंबर जैन समाज एवं नगर परिषद की ओर से क्षेत्रीय विधायक श्री यादवेंद्र सिंह के नागरिक सम्मान पत्र का वाचन पार्षद गगनदीप फणींद ने किया। विधायक श्री यादवेंद्र सिंह ने कहा कि विधायक बनने के बाद वे पहली बार फलहोडी बड़ागांव में मुनि श्री विशांत सागर जी महाराज की प्रवचन सभा में आए थे। उस दौरान उन्होंने टीन शेड निर्माण की घोषणा की थी और आज उसका लोकार्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने क्षेत्र में पेवर्स लगवाने के कार्य के लिए विधायक निधि से 5 लाख रुपए देने की घोषणा भी की। समारोह में श्री सूर्यप्रकाश मिश्रा, पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष; सिंघई महेंद्र जैन, अध्यक्ष जैन समाज; श्री धरणेंद्र जैन, आईपीएस एवं अपर सचिव, स्वास्थ्य विभाग, मध्य प्रदेश शासन; श्री जिनेंद्र जैन, सहायक आबकारी अधिकारी, जबलपुर; हीरालाल, झांसी; डॉ. राजेश, आगरा; देवेंद्र, खुरई; आलोक दाऊ, घुवारा; श्री रानू सिंघई, पार्षद सहित बड़ी संख्या में समाज के श्रेष्ठीजन उपस्थित रहे।

राजस्थान में जियो के 10 साल बेमिसाल: किफायती डेटा, फ्री कॉलिंग और मजबूत नेटवर्क ने बदला डिजिटल परिदृश्य

अगस्त 2016 में शून्य मोबाइल ग्राहक आधार से शुरूआत, जून 2026 तक 41.4% सीएजीआर के साथ जियो ने राजस्थान में जोड़े 2.83 करोड़ मोबाइल ग्राहक

जयपुर. शाबाश इंडिया

रिलायंस जियो ने राजस्थान में अपने कमर्शियल लॉन्च के बाद पहले ही दशक में टेलीकॉम बाजार में अपनी शीर्ष स्थिति को लगातार मजबूत बनाए रखा है। सितंबर 2016 में जब जियो ने भारतीय टेलीकॉम बाजार में कदम रखा था, तब शायद ही किसी ने कल्पना की होगी कि कुछ ही वर्षों में यह पूरे उद्योग की तस्वीर बदल देगा। जियो 5 सितंबर को अपने 10 साल पूरे करने जा रहा है। राजस्थान टेलीकॉम सर्किल में अपने पहले दशक के दौरान नेट मोबाइल सब्सक्राइबर जोड़ने के मामले में रिलायंस जियो सबसे आगे रहा है। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) के अनुसार, अगस्त 2016 में शून्य ग्राहक आधार से शुरूआत करने वाले जियो ने राजस्थान में अपने पहले ही महीने, सितंबर 2016 में, 9.6 लाख मोबाइल ग्राहक जोड़ लिए थे। जून 2026 तक यह संख्या 2.83 करोड़ हो गई है। इस दौरान जियो ने 2.73 करोड़ नेट मोबाइल ग्राहक जोड़े और 41.4% का कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (सीएजीआर) दर्ज किया। यह 41.4% सीएजीआर पहले से मौजूद टेलीकॉम ऑपरेटरों की तुलना में कहीं अधिक है। ट्राई की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, जून 2026 तक राजस्थान में कुल 6.85 करोड़ मोबाइल ग्राहकों में जियो की हिस्सेदारी 41.2% है। जियो ने जून 2019 में पहली बार नंबर 1 स्थान हासिल किया था और तब से लगातार अपना शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। इसके अलावा, राजस्थान के विशाल ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में डिजिटल पहुंच को बढ़ावा देते हुए जियो ने राज्य में 14.81 लाख घरों एवं परिसरों को जियोफाइबर और जियो एयरफाइबर सेवाओं से जोड़ा है। ये सेवाएं हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड के साथ आधुनिक होम एंटरटेनमेंट सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं। होम ब्रॉडबैंड सेगमेंट में भी जियो राजस्थान में मार्केट लीडर बना हुआ है।

जियो की जबरदस्त ग्रोथ के मुख्य कारण

जून 2026 तक पूरे देश में जियो के लगभग 53.33 करोड़ ग्राहक हैं, जिनमें 28.5 करोड़ 5जी ग्राहक शामिल हैं। जियो के लॉन्च से पहले कॉल रेट और डेटा चार्ज ग्राहकों के लिए बड़ी समस्याएं थे। जियो ने किफायती डेटा और फ्री कॉलिंग की रणनीति अपनाकर एक नए दौर की शुरूआत की और ग्राहकों को इन दोनों चिंताओं से काफी हद तक राहत दी। एक दशक पहले भारतीय ग्राहक मोबाइल डेटा का इस्तेमाल लगभग मेगाबाइट के हिसाब से नाप-तोलकर किया करते थे। आज देश में डेटा की खपत इतनी अधिक है कि दुनिया के बहुत कम बाजार इसकी बराबरी कर सकते हैं। इस बदलाव के पीछे जियो की एक बड़ी भूमिका रही है, जो कनेक्टिविटी को किफायती बनाने से लेकर आधुनिक टेक्नोलॉजी, डिवाइसेज और मजबूत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने तक के सफर से जुड़ी है। 2016 में भारत में प्रति सब्सक्राइबर औसत मासिक मोबाइल डेटा खपत 0.2 जीबी से कम थी। उस समय 1 जीबी डेटा की कीमत लगभग 228 रुपए थी। 1 करोड़ से भी कम भारतीयों की पहुंच 4जी नेटवर्क तक थी और औसत डाउनलोड स्पीड मुश्किल से लगभग 2.5 एमबीपीएस के आसपास थी। फिर जियो आया। इसके बाद जो हुआ, वह केवल टेलीकॉम प्राइस वॉर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारतीयों के इंटरनेट के साथ संबंध को ही बदल दिया। आज एक दशक बाद 1 जीबी डेटा की कीमत लगभग 7.9 रुपए रह गई है, जो करीब 97% कम है। देशभर में एक्टिव 4जी और 5जी सब्सक्राइबर की संख्या बढ़कर लगभग 93.8 करोड़ हो गई है। जियो के नेटवर्क पर एक औसत सब्सक्राइबर अब प्रति माह 42.3 जीबी डेटा का इस्तेमाल करता है।

स्वदेशी तकनीक और स्टैंडअलोन 5जी पर जोर

टेलीकॉम नेटवर्क की पिछली पीढ़ियां मुख्य रूप से इंपोर्टेड प्रोप्राइटरी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर पर आधारित थीं। इसके कारण ऑपरेटरों को न केवल इक्विपमेंट के लिए, बल्कि टेक्नोलॉजी अपग्रेड और रोडमैप आदि के लिए भी विदेशी वेंडर्स पर निर्भर रहना पड़ता था। इसके विपरीत, जियो लगातार एक ऐसे एंड-टू-एंड, क्लाउड-नेटिव स्टैंडअलोन 5जी नेटवर्क के विकास में निवेश कर रहा है, जिसे भारत की भौगोलिक एवं तकनीकी परिस्थितियों के अनुरूप तैयार किया गया है। यह नेटवर्क अत्याधुनिक तकनीक और मजबूत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के जरिए देश में तेज एवं विश्वसनीय कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आत्मा की विकारों से रक्षा करना ही रक्षाबंधन का सुंदर अर्थ: गणिनी आर्यिका जिनदेवी माताजी

सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में मनाया रक्षाबंधन, 700 मुनिराजों को चढ़ाया अर्घ्य

जयपुर. शाबाश इंडिया। सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका 105 जिनदेवी माताजी ससंघ के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस भी मनाया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। धर्मसभा में गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न जिनदेवी माताजी ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का पर्व नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास, त्याग और आत्मीयता की रक्षा का संदेश देने वाला पर्व है। जैन धर्म की दृष्टि से रक्षा का सबसे सुंदर अर्थ अपने भीतर के विकारों से आत्मा की रक्षा करना है। क्रोध, मान, माया और लोभ से स्वयं की रक्षा करने वाला ही सच्चा विजेता है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन हमें गलत विचारों, आदतों और संगति से बचने तथा धर्म, संस्कार और आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प देता है। जैन परंपरा में रक्षाबंधन का संबंध विष्णुकुमार मुनिराज द्वारा अकंपनाचार्य आदि 700 मुनिराजों की रक्षा से माना जाता है। इससे पूर्व चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, माताजी के पाद प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट की गई। श्री रक्षा बंधन विधान का संगीतमय आयोजन हुआ और 700 मुनिराजों को अर्घ्य चढ़ाया गया। श्रद्धालुओं ने माताजी की पिच्छिका पर रक्षा सूत्र बांधकर अपनी कलाई पर भी रक्षा सूत्र बंधवाया। मंदिर अध्यक्ष दीनदयाल पाटनी, उपाध्यक्ष सुनील सेठी, महामंत्री धर्मीचंद कासलीवाल एवं कोषाध्यक्ष राकेश मुशरफ सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। यह जानकारी राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने दी।

रक्षा का सच्चा सूत्र है धर्म, संयम और आत्मबल: आचार्यश्री उदारसागर

रक्षाबंधन महामंडल विधान में आत्मशुद्धि और कर्मक्षय का संदेश; मुनिराजों की पिच्छिकाओं पर बांधी राखी, भगवान श्रेयांशनाथ को चढ़ाया निर्वाण लाडू

मुरैना। (मनोज जैन नायक) रक्षाबंधन के पावन अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में रक्षाबंधन महामंडल विधान के दौरान धर्म और भक्ति का वातावरण बना रहा। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से जिनेंद्र भगवान का पूजन-अर्चन किया तथा विधान के माध्यम से आत्मशुद्धि और कर्मक्षय की भावना जागृत की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्य श्री 108 उदारसागर महाराज ने रक्षाबंधन के ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक प्रसंग का उल्लेख करते हुए 700 मुनिराजों की रक्षा और उनकी अद्भुत आत्मसाधना का प्रसंग सुनाया। उन्होंने कहा कि यह प्रसंग हमें केवल किसी की बाहरी रक्षा करने की प्रेरणा नहीं देता, बल्कि अपनी आत्मा की रक्षा करने का संदेश भी देता है। आचार्यश्री ने कहा कि आत्मा को बचाना ही सबसे बड़ी रक्षा है। बाहर की वस्तुओं की रक्षा के लिए हम अनेक उपाय करते हैं, लेकिन अपनी आत्मा को कषायों से बचाने का प्रयास बहुत कम करते हैं। क्रोध आत्मा को जलाता है, मान उसे अहंकार में बांधता है, माया छल-कपट की ओर ले जाती है और लोभ मनुष्य को कभी संतुष्ट नहीं होने देता। इन कषायों से आत्मा की रक्षा करना ही सच्चे अर्थों में धर्म की रक्षा है।

शाबाश इंडिया। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर 99 वर्षीय श्रीमती उमराव देवी पाटनी जी ने अपने भाई, 97 वर्षीय वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रवीण चंद छाबड़ा को राखी बांधी। दो उम्रदराज दिल, एक अटूट रिश्ता–बचपन की स्मृतियों से आज तक राखी का यह स्नेह, समय की सीमाओं से परे है। उम्र बढ़ती रही, लेकिन भाई-बहन का प्रेम आज भी उतना ही अटूट और आत्मीय है।

जैन धर्मावलंबियों ने साधु-संतों की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में मनाया रक्षाबंधन

भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक मनाया, निर्वाण लाडू चढ़ाया; श्री विष्णुकुमार महामुनि की विशेष पूजा-अर्चना

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्मावलंबियों ने श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार को रक्षाबंधन पर्व को धर्म एवं साधु-संतों की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया। इस अवसर पर जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाते हुए मंदिरों में निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। साथ ही दिगंबर जैन परंपरा के प्रसिद्ध संत श्री विष्णुकुमार महामुनि द्वारा हस्तिनापुर में 700 जैन मुनियों के उपसर्ग दूर कर उनकी रक्षा किए जाने की स्मृति में उनकी विशेष पूजा-अर्चना की गई। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन राजा बलि द्वारा हस्तिनापुर में 700 साधु-संतों पर अत्याचार किए जाने की जैन परंपरा में मान्यता है। इस उपसर्ग को महामुनि विष्णुकुमार ने ब्राह्मण का रूप धारण कर दूर किया था। इसी प्रसंग की स्मृति में जैन धर्मावलंबी रक्षाबंधन को प्रतिवर्ष साधु-संतों की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर दिगंबर जैन संतों के चातुर्मास स्थलों एवं शहर के विभिन्न दिगंबर जैन मंदिरों में महामुनि विष्णुकुमार की अष्टद्रव्य से पूजा-अर्चना की गई। श्रावकों ने आचार्यों, मुनिराजों एवं आर्यिका माताजी की पिच्छिकाओं पर रक्षा सूत्र बांधकर साधु-संतों, जिनवाणी एवं जैन धर्म की रक्षा का संकल्प लिया।

भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक मनाया

विनोद जैन ने बताया कि इसी दिन जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस भी मनाया गया। मंदिरों में प्रातः भगवान का अभिषेक एवं शांतिधारा कर पूजा-अर्चना की गई। पूजा के दौरान निर्वाण कांड का सामूहिक उच्चारण किया गया। मोक्ष कल्याणक श्लोक...

''गिरि समेदतै पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासी सावन को।
कुलिशायुध गुनगायो, मै पूजो आप निकट आवन को।''

का मंत्रोच्चार एवं जयकारों के साथ उच्चारण कर मोक्ष कल्याणक अर्घ्य एवं निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। उन्होंने बताया कि दिल्ली रोड स्थित जयसिंहपुरा खोर के दिगंबर जैन मंदिर में मूलनायक भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक मनाया गया। दुर्गापुरा के श्री दिगंबर जैन मंदिर चंद्रप्रभुजी, सूर्य नगर-तारों की कूट स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, जौहरी बाजार के मोतीसिंह भोमियो का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर जीऊबाईजी सहित अनेक मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। विनोद जैन के अनुसार निमोडिया के गोलोक धाम में आचार्य प्रज्ञासागर महाराज ससंघ,

सांगानेर थाना सर्किल स्थित चित्रकूट कॉलोनी के श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य विशदसागर महाराज ससंघ, साधु सेवा तीर्थ पदमपुरा बाड़ा में आचार्य शशांकसागर मुनिराज ससंघ, जनकपुरी के श्री दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य आदित्यसागर महाराज ससंघ तथा दहमीकला के ऋषभदेव दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य नवीन नंदी महाराज के सान्निध्य में विशेष आयोजन हुए। भट्टारकजी की नसिया में उपाध्याय उर्जयंत सागर मुनिराज, मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ भवन में निर्यापक मुनि विलोकसागर महाराज एवं मुनि विबोधसागर महाराज, मुहाना मंडी के पारस विहार स्थित चिंतामणि पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मुनि विश्वविजयसागर महाराज, दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में मुनि मार्दवनंदी महाराज तथा मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

जयपुर हाउस जैन मंदिर में वात्सल्य पर्व एवं निर्वाण कल्याणक महोत्सव श्रद्धा-भक्ति के साथ संपन्न

आगरा. शाबाश इंडिया

जयपुर हाउस स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति के तत्वावधान में तपस्वी सम्राट वर्षायोग-2026 के अंतर्गत वात्सल्य पर्व, 700 मुनिराजों के रक्षा दिवस एवं भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव का आयोजन आचार्यश्री सौभाग्य सागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ संपन्न हुआ। सुबह से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया। भगवान के जयकारों, भक्ति संगीत एवं धार्मिक अनुष्ठानों से पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय नजर आया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान के अभिषेक से हुआ। इसके पश्चात शांतिधारा एवं विधिवत पूजन-अर्चना की गई। श्रद्धालुओं ने विभिन्न धार्मिक द्रव्यों से भगवान का पूजन कर सुख-शांति, समृद्धि एवं धर्म की मंगल कामना की। इस दौरान मंदिर परिसर में भक्ति संगीत की मधुर स्वर लहरियां गूंजती रहीं। भजन मंडली द्वारा प्रस्तुत भक्तिमय भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर भगवान की आराधना में लीन नजर आए। भक्ति संगीत के बीच गूंजते भगवान के जयकारों से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। प्रवचन में आचार्यश्री सौभाग्य सागर महाराज ने वात्सल्य पर्व एवं मुनि रक्षा पर्व के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में साधु-संतों का जीवन त्याग, तप, संयम एवं अहिंसा का प्रतीक है। उन्होंने श्रद्धालुओं से जीवन में धर्म, संयम, करुणा एवं अहिंसा के सिद्धांतों को अपनाने तथा साधु-संतों के प्रति श्रद्धा एवं वात्सल्य भाव बनाए रखने का आह्वान किया। प्रातः 8 बजे भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के अवसर पर भक्तिभावपूर्वक 11 निर्वाण लाडू भगवान के चरणों में अर्पित किए गए। निर्वाण लाडू समर्पित किए जाने के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान के जयकारे लगाए और मोक्षमार्ग के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। इसके पश्चात मंगल आरती हुई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। दीपों की रोशनी, घंटियों की मधुर ध्वनि एवं भक्तिमय वातावरण से मंदिर परिसर आलोकित हो उठा।

मुनिराजों की पिच्छिकाओं पर बांधी राखी

700 मुनिराजों के रक्षा दिवस के रूप में मनाए गए रक्षाबंधन पर्व पर विशेष धार्मिक आयोजन किया गया। आचार्यश्री सौभाग्य सागर महाराज की पिच्छिका पर स्वर्ण राखी, मुनिश्री स्वयंभूसागरजी महाराज की पिच्छिका पर चांदी की राखी तथा क्षुल्लिका श्री सुअथेष्टमति माताजी की पिच्छिका पर राखी बांधने का सौभाग्य बोली के माध्यम से सौभाग्यशाली परिवारों ने प्राप्त किया। श्रद्धालुओं ने भावपूर्वक राखी अर्पित करते हुए धर्म, संयम एवं साधु-संतों की रक्षा तथा उनके उपदेशों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। अन्य श्रद्धालुओं के लिए भी राखी अर्पित करने की व्यवस्था की गई। इसके साथ ही मंदिर में चल रहे 16 दिवसीय विधान के अंतिम दिन के धार्मिक अनुष्ठान भी विधि-विधानपूर्वक संपन्न हुए। समापन अवसर पर मंदिर समिति की ओर से पहली बार सभी श्रद्धालुओं के लिए विशेष रूप से सेवई की खीर का वितरण किया गया। प्रसाद ग्रहण कर श्रद्धालुओं ने आयोजन के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की। बड़ी संख्या

में श्रावकों को आचार्य संघ को आहार कराने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। पूरे आयोजन के दौरान मंदिर परिसर में भक्ति, संगीत, पूजन, धार्मिक अनुष्ठान, मंगल आरती एवं जयकारों का अद्भुत संगम देखने को मिला। बड़ी संख्या में जैन समाज के श्रद्धालुओं ने परिवार सहित कार्यक्रम में सहभागिता कर धर्मलाभ अर्जित किया। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति ने सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लगभग 20 वर्षों बाद जयपुर हाउस मंदिर में इस प्रकार के विशेष धार्मिक आयोजन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह आयोजन समस्त समाज के लिए आध्यात्मिक आनंद, भक्ति, वात्सल्य एवं पुण्यार्जन का विशेष अवसर बना। कार्यक्रम का समापन मंगल आरती, भगवान के जयकारों एवं मंगल भावनाओं के साथ हुआ। इस अवसर पर श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति, तपस्वी सम्राट वर्षायोग समिति, शांतिनाथ युवा मंडल, शांतिनाथ महिला मंडल एवं स्वास्तिक महिला मंडल के पदाधिकारी एवं सदस्य बड़ी संख्या में मौजूद रहे। **रिपोर्ट : शुभम जैन**

गुदड़ी मंसूर खां जैन मंदिर में श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया श्रेयांसनाथ भगवान का निर्वाण कल्याणक महोत्सव

आगरा. शाबाश इंडिया

गुदड़ी मंसूर खां स्थित श्री शीतलनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चल रहे 16 दिवसीय शांतिनाथ महामंडल विधान के अंतर्गत शुक्रवार को भगवान श्रेयांसनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव एवं रक्षाबंधन महापर्व श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर भगवान के जयकारों और भक्तिमय संगीत से गूंज उठा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होकर पुण्यार्जन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुआ। पंडित सौरभ जैन शास्त्री एवं रविंद्र जैन शास्त्री के निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ विधान की विभिन्न धार्मिक क्रियाएं संपन्न कराई गईं। श्रद्धालुओं ने विधि-विधानपूर्वक अष्टद्रव्य से भगवान श्रेयांसनाथ की पूजा-अर्चना की और सुख-शांति एवं विश्व कल्याण की कामना की। इसके बाद भक्तिमय संगीत की मधुर धुनों के बीच निर्वाण कांड का वाचन किया गया। भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाण कल्याणक की मंगल बेला पर श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से प्रभु के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया। जयकारों से मंदिर परिसर का वातावरण आध्यात्मिक एवं भक्तिमय हो उठा। धर्मसभा को संबोधित करते हुए पंडित सौरभ जैन शास्त्री ने रक्षाबंधन पर्व के जैन धर्म में महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जैन परंपरा में रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के स्नेह का पर्व नहीं, बल्कि धर्म एवं साधु-संतों की रक्षा से जुड़ा महत्वपूर्ण पर्व है। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में अकंपनाचार्य के नेतृत्व में 700 मुनिराजों का संघ हस्तिनापुर पहुंचा था। राजा बलि द्वारा मुनियों पर उपसर्ग किए जाने पर मुनि विष्णुकुमार ने अपनी शक्ति एवं बुद्धिमत्ता से उनकी रक्षा की। इसी ऐतिहासिक प्रसंग की स्मृति में जैन समाज द्वारा रक्षाबंधन महापर्व मनाया जाता है। मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि 16 दिवसीय विधान का समापन 29 अगस्त को विश्व शांति महायज्ञ के साथ होगा। समापन अवसर पर विशेष धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाएंगे तथा विश्व शांति एवं मंगल की कामना के साथ यज्ञ संपन्न कराया जाएगा। इस अवसर पर सुभाष जैन, वीरेंद्र जैन, नरेश जैन, राकेश जैन पार्षद, धर्मेश जैन, धर्मेंद्र जैन, सुशीला जैन, सुमन जैन सहित गुदड़ी मंसूर खां जैन समाज के श्रद्धालु एवं बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

श्रावणी उपाकर्म में गूंजा स्वाध्याय और संस्कार का संदेश

आत्मचिंतन से श्रेष्ठ जीवन की ओर बढ़ने का आह्वान

उदयपुर. शाबाश इंडिया

वेदों की ज्ञान परंपरा, आत्मचिंतन और संस्कारों को जीवन में उतारने का संदेश देते हुए आर्य समाज हिरण मगरी का छह दिवसीय वेद प्रचार समारोह शुक्रवार को श्रावणी उपाकर्म पर्व के साथ संपन्न हुआ। वैदिक परंपरा में विशेष महत्व रखने वाले इस पर्व पर उपस्थित आर्यजनों ने स्वाध्याय, विद्यारंभ और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाने का संकल्प लिया। समारोह में आर्ष विद्याकुलम बढ़ेड़ी, मुजफ्फरनगर के कुलपति आचार्य योगेश भारद्वाज ने कहा कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल आजीविका अर्जित करना नहीं, बल्कि मनुष्य के चरित्र को परिष्कृत कर समाज निर्माण में उसकी सार्थक भूमिका सुनिश्चित करना है। उन्होंने यजमानों को यज्ञोपवीत धारण करने के साथ वेदाध्ययन, स्वाध्याय और ज्ञान-साधना का संकल्प दिलाया। उपमंत्री भूपेंद्र शर्मा ने बताया कि वैदिक काल से चली आ रही श्रावणी उपाकर्म की परंपरा ज्ञान के नवीनीकरण और आत्ममंथन का पर्व मानी जाती है। इंद्र प्रकाश वैदिक ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच यज्ञ संपन्न कराया। पंडित इंद्रदेव पीयूष ने रक्षाबंधन, प्रभु भक्ति और महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन-संदेशों पर आधारित प्रेरक भजनों की प्रस्तुतियों से वातावरण को भावपूर्ण बनाया। विशिष्ट अतिथि के रूप में वानप्रस्थी मुनि नरेंद्र आर्य उपस्थित रहे। आर्य समाज हिरण मगरी के प्रधान संजय शांडिल्य ने स्वागत उद्बोधन दिया, जबकि मंत्री वेद मित्र आर्य ने आभार व्यक्त किया। सरला आर्या के शांति पाठ एवं जयघोष के साथ समारोह का समापन हुआ। संचालन भूपेंद्र शर्मा ने किया। वैदिक संस्कृति के संवर्धन में योगदान के लिए आचार्य योगेश भारद्वाज, मुनि नरेंद्र आर्य, इंद्रदेव पीयूष, दीपक दांत्या, गोविंद ओड और नूतन गर्ग का मेवाड़ी पाग, शॉल, गायत्री मंत्र पट्टिका एवं पत्रम्-पुष्पम् भेंट कर अभिनंदन किया गया। समारोह में संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया, शारदा गुप्ता, उपप्रधान कृष्ण कुमार सोनी, कोषाध्यक्ष रमेशचंद्र जायसवाल, योगाचार्य जिग्नेश शर्मा सहित बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे।

रिपोर्ट/फोटो:
यौवन्तराज माहेश्वरी

स्नेह का धागा, भरोसे का बंधन; उल्लास में डूबा उदयपुर का हर मन

उदयपुर. शाबाश इंडिया

झीलों की नगरी शुक्रवार को रिश्तों की मिठास, अपनत्व की गर्माहट और विश्वास के रंग में रंगी नजर आई। भाई-बहन के अटूट प्रेम का पर्व रक्षाबंधन शहरभर में हर्षोल्लास और पारंपरिक उल्लास के साथ मनाया गया। सुबह से ही घरों में उत्सवी माहौल रहा, वहीं बाजारों और मंदिरों में भी पर्व की रौनक दिखाई दी। शुभ मुहूर्त में बहनों ने भाइयों के मस्तक पर तिलक लगाया, कलाई पर रंग-बिरंगी राखियां बांधी और आरती उतारकर उनके सुख, समृद्धि एवं दीर्घायु की कामना की। भाइयों ने भी बहनों को उपहार देकर हर परिस्थिति में साथ निभाने तथा उनके सम्मान और सुरक्षा का संकल्प दोहराया। कहीं छोटी बहनों की शरारतों के बीच राखी बंधी, तो कहीं उम्रदराज भाई-बहनों की आंखों में बचपन की स्मृतियां फिर जीवंत हो उठीं। पर्व की सबसे खूबसूरत तस्वीर उन परिवारों में दिखाई दी, जहां दूर-दराज से भाई-बहन केवल रक्षाबंधन मनाने के लिए अपने घर पहुंचे। लंबे समय बाद मिले भाई-बहनों के बीच अपनत्व छलका और घरों के आंगन हंसी-ठिठोली से गुलजार रहे। विवाहित बेटियों के मायके पहुंचने से कई घरों में त्योहार की रौनक दोगुनी हो गई। शहर के प्रमुख बाजारों में सुबह से ही राखियों, मिठाइयों, नारियल एवं उपहारों की खरीदारी के लिए चहल-पहल रही। पारंपरिक राखियों के साथ आकर्षक डिजाइन वाली राखियां बच्चों और युवाओं की पसंद बनीं। मिठाई की दुकानों पर भी ग्राहकों की भीड़ नजर आई। मंदिरों में श्रद्धालुओं ने दर्शन कर परिवार की खुशहाली की कामना की। विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों की ओर से भी रक्षाबंधन के आयोजन किए गए। कई स्थानों पर महिलाओं और बालिकाओं ने पुलिसकर्मियों, सुरक्षाकर्मियों तथा समाजसेवियों को राखी बांधकर सामाजिक सौहार्द एवं भाईचारे का संदेश दिया। दिन ढलने तक उदयपुर की फिजां मानो यही कहती रही—राखी केवल कलाई पर बंधा धागा नहीं, बल्कि रिश्तों में सहेजे गए विश्वास, जिम्मेदारी और आत्मीयता का वह वचन है, जो समय के साथ और मजबूत होता जाता है।

रिपोर्ट/फोटो : राकेश शर्मा 'राजदीप'

सिद्ध क्षेत्र फलहोंडी बड़ागांव में विकास कार्यों का लोकार्पण, भूमि पूजन एवं बेदी शिलान्यास संपन्न

धार्मिक एवं सामाजिक आस्था के केंद्रों का विकास हमारी प्राथमिकता : विधायक यादवेंद्र सिंह बुंदेला

लार (टीकमगढ़). शाबाश इंडिया

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर बड़ागांव धसान के समस्त जैन समाज की ओर से सिद्ध क्षेत्र फलहोंडी में विभिन्न धार्मिक एवं विकास कार्यों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विधायक निधि से निर्मित भव्य टीन शेड का लोकार्पण तथा वेदिका निर्माण के लिए भूमि पूजन एवं बेदी शिलान्यास धार्मिक अनुष्ठानों और विधि-विधान के साथ क्षेत्रीय श्रद्धालुओं की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। भूमि पूजन के बाद पंडाल भगवान के जयकारों से गूंज उठा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय विधायक यादवेंद्र सिंह बुंदेला ने कहा कि धार्मिक एवं सामाजिक आस्था के केंद्रों का विकास हमारी पहली प्राथमिकता है। क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कार्य निरंतर किए जाते रहेंगे। क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी सेठ प्रभात ने बताया कि कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक एवं पूर्व मंत्री यादवेंद्र सिंह बुंदेला, श्री धरणेंद्र जैन आईएएस, श्री सूर्यप्रकाश मिश्रा, पूर्व मंडी अध्यक्ष, श्री महेंद्र सिंघई बड़ागांव, श्री श्रेयांश जैन, श्री गगनदीप फणींद्र पार्षद, श्री सुरेंद्र कुमार सिंघई, श्री निर्मल जैन घुवारा, श्री आलोक जैन घुवारा, महामंत्री मुन्नालाल शाह, हुकमचंद हटेया, डॉ. कैलाशचंद्र नुना, राजेश जैन, मुकेश जैन लार सहित जैन समाज के गणमान्यजन एवं सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। समस्त जैन समाज की ओर से क्षेत्रीय विधायक यादवेंद्र सिंह बुंदेला एवं उपस्थित गणमान्यजनों का आत्मीय स्वागत एवं सम्मान किया गया। धार्मिक अनुष्ठानों और जयकारों के बीच संपन्न हुए आयोजन से सिद्ध क्षेत्र फलहोंडी का वातावरण भक्तिमय हो उठा।

गायत्री नगर में पहली बार अकंपनाचार्यादि 700 महामुनियों की पूजा कर मनाया रक्षाबंधन महापर्व

जयपुर. शाबाश इंडिया। महारानी फार्म स्थित दिगंबर जैन मंदिर, गायत्री नगर में गुरुवार को पहली बार रक्षाबंधन महापर्व के अवसर पर अकंपनाचार्यादि 700 महामुनियों की पूजा-अर्चना श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ की गई। मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में देवाधिदेव 1008 श्री श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक, परम पूज्य आचार्य अकंपनाचार्य एवं परम पूज्य आचार्य श्री विष्णुकुमार महामुनिराज के वात्सल्य तथा श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस के रूप में रक्षाबंधन महापर्व मनाया गया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि इस अवसर पर श्रेयांसनाथ भगवान, अकंपनाचार्यादि 700 मुनिराजों एवं वात्सल्य महामुनिराज विष्णुकुमार की पूजा की गई। सोधर्म इंद्र के रूप में संजय-नीलम ठोलिया, आयुषी सोनी परिवार, कुबेर इंद्र आलोक-प्रमिला एवं अरुण-ज्योति शाह परिवार तथा द्रव्य पुण्यार्जक सुनील-लता सोगनी परिवार सहित उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने पूजा-अर्चना की। इसके पश्चात मंडल पर 700 अर्घ्य चढ़ाए गए। सभी उपस्थित इंद्र-इंद्राणियों ने भी अर्घ्य समर्पित किए। सभी मांगलिक क्रियाएं विधानाचार्य पं. अजीत शास्त्री ने संपन्न कराईं। उन्होंने रक्षाबंधन महापर्व के धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व की जानकारी देते हुए बताया कि जैन परंपरा के अनुसार हस्तिनापुर में अकंपनाचार्यादि 700 मुनियों पर घोर उपसर्ग किया गया था। उनकी रक्षा वात्सल्य महामुनिराज विष्णुकुमार ने की थी। इसी प्रसंग की स्मृति में रक्षाबंधन महापर्व मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि इस पर्व को श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस के रूप में मनाने की प्रेरणा परम पूज्य निर्यापक मुनि सुधासागरजी महाराज ने दी। कार्यक्रम का संचालन मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह ने किया। उन्होंने बताया कि 28 अगस्त को भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर प्रातः 6:15 बजे अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू अर्पित किए जाएंगे।

पुलिस भैयाओं को राखी बांधकर मनाया रक्षाबंधन पर्व

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। पुलिसकर्मी दीपावली, होली, रक्षाबंधन, ईद, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, रैलियों, जयंती समारोहों, जुलूसों सहित सभी सामाजिक एवं धार्मिक पर्वों पर तथा सर्दी, गर्मी और बरसात में दिन-रात आमजन की सुरक्षा, व्यवस्था एवं सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। पुलिसकर्मी समाज के सच्चे रक्षक हैं। इसी भावना के साथ शुक्रवार, 28 अगस्त को पुलिस थाना कुचामन में ''सबकी सेवा, सबको प्यार–जीवो और जीने दो'' एवं ''दोस्ती से सेवा'' के उद्देश्यों वाली संस्था महावीर इंटरनेशनल परिवार, कुचामन की वीरा धरा की ओर से पुलिसकर्मियों को राखी बांधकर एवं मुंह मीठा करवाकर रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। इस अवसर पर एसएचओ राजेंद्र खदान, एएसआई जगदीश प्रसाद, हेड कांस्टेबल कंचन, संदीप, दुर्गाराम, केसराम, राजकुमार, लाल सिंह रणवा, तेजाराम एवं रोशन सहित पुलिसकर्मियों को राखी बांधकर उनके स्वस्थ, सुखी एवं कुशल जीवन की मंगलकामना की गई। कार्यक्रम में वीरा अध्यक्षा सरोज पाटनी, वीरा सचिव शारदा वर्मा, वीरा सुनीता गंगवाल, वीरा विजय कौर, वीर नंदकिशोर बिडसर, वीरा कल्पना, वीरा मनीषा पहाड़िया, वीरा रीतु बंसल, वीरा कविता अग्रवाल, वीरा सोनू, वीर संदीप पांड्या, वीर रामावतार गोयल, वीर अजित पहाड़िया, वीर सुरेंद्र सिंह दीपपुरा, वीर तेजकुमार बड़जात्या, वीर गोरधन मालवीय, वीर आनंद, वीरा आशा सेठी, वीर विकास, रीतु पाटनी एवं वीर राहुल झांझरी ने सहयोग किया। महावीर इंटरनेशनल परिवार के वीर सुभाष पहाड़िया एवं वीर कैलाशचंद पांड्या ने बताया कि संस्था के सदस्यों ने इस सेवा एवं स्नेहपूर्ण कार्यक्रम में सहभागी बनकर पुलिस भैयाओं के प्रति सम्मान, स्नेह एवं आभार व्यक्त किया। – **वीर सुभाष पहाड़िया**

रक्षाबंधन विधान में 700 अर्घ्य अर्पित, आचार्य विहर्षसागरजी महाराज ने दिया मंगल आशीर्वाद

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

आचार्य 108 श्री विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में रक्षाबंधन महापर्व के अवसर पर श्री रक्षाबंधन विधान का भव्य आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ किया गया। विधान में श्रद्धालुओं द्वारा 700 अर्घ्य अर्पित किए गए। विधान के दौरान मुख्य कलश स्थापित करने का सौभाग्य पवन पाटनी एवं कालू को प्राप्त हुआ। अन्य कलश श्री महावीरप्रसाद-प्रदीपकुमार गंगवाल (रूपनगढ़ वाले), मांगीलाल-चिरंजीलाल झांझरी (लिचाना वाले), दीपक जैन (जोधपुर वाले) तथा मोतीलाल-नरेश गंगवाल ने स्थापित किए।

अकंपनाचार्य मुनिराज की रक्षाबंधन कथा का हुआ स्मरण

रक्षाबंधन विधान के दौरान अकंपनाचार्य मुनिराज एवं उनके 700 मुनियों के संघ से जुड़ी रक्षाबंधन की ऐतिहासिक कथा का स्मरण किया गया। जैन परंपरा के अनुसार हस्तिनापुर में अकंपनाचार्य मुनिराज अपने 700 मुनियों के संघ के साथ चातुर्मास कर रहे थे। इसी दौरान बलि आदि मंत्रियों द्वारा मुनिराज एवं उनके संघ पर अग्नि का उपसर्ग किया गया। इस प्रसंग के माध्यम से धर्म, संयम एवं साधु-संघ की रक्षा के भाव को विशेष रूप से स्मरण किया जाता है।

साधु और श्रावक एक-दूसरे के पूरक : आचार्यश्री

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य 108 श्री विहर्षसागरजी महाराज ने कहा कि साधु और श्रावक एक-दूसरे के पूरक हैं। साधु के बिना श्रावक अधूरा है और श्रावक के बिना साधु अधूरा है। उन्होंने कहा कि श्रावक का धर्म है कि वह धर्म की रक्षा करे। यदि हम धर्म की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं तो कहीं न कहीं हममें कमी है। रक्षाबंधन केवल एक-दूसरे की कलाई पर धागा बांधने का पर्व नहीं, बल्कि धर्म, संस्कार एवं एक-दूसरे की रक्षा का संकल्प लेने का अवसर है। आचार्यश्री ने सभी श्रद्धालुओं को रक्षाबंधन पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि अगले रक्षाबंधन तक सभी प्रसन्न रहें, खुश रहें और धर्ममय जीवन व्यतीत करें।

चित्र अनावरण, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य

आचार्य 108 श्री वर्धमानसागरजी महाराज, आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज एवं आचार्य 108 श्री विशुद्धसागरजी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन करने का सौभाग्य महावीरप्रसाद-मधु, कुमुद एवं रजत बोहरा परिवार (आनंदपुर कालू) को प्राप्त हुआ। इसी परिवार ने आचार्यश्री विहर्षसागरजी महाराज के पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य भी प्राप्त किया। एक माह के वात्सल्य भोज के पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य भागचंद, विमलचंद, प्रकाशचंद, अशोककुमार, राजकुमार एवं मनोज बोहरा परिवार को प्राप्त हुआ। वहीं भामाशाह के रूप में अशोक पाटनी एवं सुरेश पाटनी ने सहयोग किया। देवाधिदेव 1008 श्री श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर श्री सम्मेद शिखर की भव्य रचना पर भगवान श्रेयांसनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा की गई तथा निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। इन धार्मिक क्रियाओं का सौभाग्य महावीरप्रसाद-मधु, कुमुद एवं रजत बोहरा परिवार (आनंदपुर कालू) तथा भागचंद, विमलचंद, प्रकाशचंद, अशोककुमार, राजकुमार एवं मनोज बोहरा परिवार को प्राप्त हुआ।

पावन रक्षाबंधन पर्व पर आत्मीय भेंट एवं शुभकामनाएं

जयपुर. शाबाश इंडिया। पावन रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर राजस्थान के माननीय राज्यपाल श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े जी से आत्मीय भेंट कर उनके साथ रक्षाबंधन पर्व मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री समग्र जैन समाज भारत महासंघ की ओर से माननीय राज्यपाल महोदय को रक्षाबंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित की गई। साहिल जैन, रक्षा जैन एवं छाया जैन परिवार की ओर से हुई यह आत्मीय भेंट अत्यंत स्मरणीय एवं गौरवपूर्ण रही।

श्री 1008 श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया

टोंक. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन नसिया, अमीरगंज, टोंक में शुक्रवार को भगवान श्री 1008 श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा से हुआ। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने विधि-विधान एवं भक्तिभावपूर्वक भगवान श्रेयांसनाथ की पूजा-अर्चना की। मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से निर्वाण कांड का वाचन करते हुए भगवान के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया। इस दौरान मंदिर परिसर भगवान के जयकारों एवं भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा। महोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। श्रद्धालुओं ने भगवान के चरणों में मंगलकामना करते हुए धर्मलाभ अर्जित किया। इस अवसर पर समाज के पवन कंटान, ओम ककोड़, अंकुर पाटनी, कुणाल, टोनी, सक्षम पासरोटियां, प्रांजल सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जनकपुरी में तीन दिवसीय श्रमणत्व रक्षा महामहोत्सव 700 अर्घ्य एवं हवन आहुतियों के साथ संपन्न

तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का निर्वाणोत्सव श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर परिसर में आचार्य श्री 108 आदित्यसागरजी महाराज के सान्निध्य में आयोजित तीन दिवसीय श्रमणत्व रक्षा महामहोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं वात्सल्य भाव के साथ संपन्न हुआ। महोत्सव के दौरान 700 अर्घ्य अर्पित किए गए तथा हवन कुंड में मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ आहुतियां दी गईं। कार्यक्रम में मुनि श्री अकंपनाचार्यजी एवं मुनि श्री विष्णुकुमारजी की पूजन-अर्चना की गई। शुक्रवार को श्रद्धालुओं द्वारा 100 अर्घ्य अर्पित किए जाने के साथ 700 अर्घ्य पूर्ण हुए। इसके पश्चात तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान की पूजा, निर्वाण कांड का वाचन एवं निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। निर्वाण लाडू अर्पित करने का सौभाग्य व्रती श्रावक रमेश एवं अरविंद सखुनियां परिवार को प्राप्त हुआ। विधान में सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य प्रदीप मीना चांदवाड़ को प्राप्त हुआ। हवन कुंड में श्रद्धालुओं ने धार्मिक मंत्रोच्चार के बीच श्रद्धापूर्वक आहुतियां अर्पित कीं और ''स्वाहा-स्वाहा'' के जयघोष किए। विधान के मुख्य कलश का सौभाग्य पदम, पारस एवं पहुप जैन बिलाला परिवार को प्राप्त हुआ। इसके बाद विधान का विधिवत विसर्जन किया गया। मुनिराजों की रक्षा एवं श्रमणत्व के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए श्रद्धालुओं ने पिच्छिका पर राखी बांधकर मुनि रक्षा का संकल्प लिया। संपूर्ण विधान पं. प्रकाशचंदजी द्वारा विधि-विधानपूर्वक संपन्न कराया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री 108 आदित्यसागरजी महाराज ने इतिहास में मुनिराजों पर हुए विभिन्न उपसर्गों एवं उनकी रक्षा के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि श्रमण संस्कृति की रक्षा केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है। मुनिराजों के प्रति वात्सल्य, श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखते हुए उनकी रक्षा और श्रमण परंपरा के संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। तीन दिवसीय महोत्सव के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह रहा। पूरे मंदिर परिसर में धर्म, भक्ति एवं श्रमणत्व रक्षा की भावना का वातावरण बना रहा।

-पदम जैन बिलाला

रक्षाबंधन महामंडल विधान का समापन

धर्म, राष्ट्र, धर्मायतनों, समाज एवं परिवार की सुरक्षा का आज संकल्प लें : मुनि श्रमण सागर

राघौगढ़. शाबाश इंडिया

ऐतिहासिक धर्मनगरी राघौगढ़ में चार दिन से चल रहे श्री रक्षाबंधन महामंडल विधान का शुक्रवार को समापन हुआ। इस अवसर पर ''श्रमण धारा प्रवचन माला'' के अंतर्गत प्रवचन करते हुए मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने श्रद्धालुओं से धर्म, राष्ट्र, धर्मायतनों, समाज एवं परिवार की सुरक्षा का संकल्प लेने का आह्वान किया। मुनि श्रमण सागरजी महाराज ने कहा कि आज का दिन जैन धर्म की दृष्टि से अत्यंत पवित्र एवं पावन है। जैन परंपरा के अनुसार इसी दिन लाखों वर्ष पूर्व हस्तिनापुर में अकंपनाचार्य आदि 700 मुनिराजों की उपसर्ग से रक्षा मुनि विष्णुकुमार ने की थी। उन्होंने कहा कि आज रक्षाबंधन का पर्व केवल भाई की कलाई पर बहन द्वारा राखी बांधने की रस्म तक सीमित रह गया है। हमें इस दिन व्यापक संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी तीन संतानें हों तो एक राष्ट्र की रक्षा करने वाला 'देशभूषण', दूसरा धर्म एवं धर्मायतनों की रक्षा करने वाला 'धर्मभूषण' और तीसरा परिवार को संस्कारित एवं व्यवस्थित रूप से चलाने वाला 'कुलभूषण' बने। संघस्थ मुनि ओंकार सागरजी महाराज ने मंगल प्रवचन में कहा कि जैन परंपरा के अनुसार हस्तिनापुर में 700 मुनिराजों पर राजा बलि के संरक्षण में अधर्मी आततायियों ने उपसर्ग किया था। उस समय विष्णुकुमार मुनि ने विक्रिया ऋद्धि के माध्यम से राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी और तीसरा पग राजा बलि की पीठ पर रखकर मुनिराजों का उपसर्ग दूर कराया। इसी पावन प्रसंग की स्मृति में जैन धर्म में इस दिन को धर्म रक्षा दिवस अथवा रक्षाबंधन पर्व के रूप में मनाया जाता है। चार दिवसीय श्री रक्षाबंधन महामंडल विधान का समापन रक्षाबंधन पर्व एवं भगवान श्रेयांसनाथ स्वामी के मोक्ष कल्याणक दिवस पर भक्ति एवं धमाराधना के साथ हुआ। प्रातः 6 बजे भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन किया गया। विधान की बड़ी जयमाला में सभी 700 मुनिराजों का स्मरण करते हुए अर्घ्य समर्पित किए गए। भगवान श्रेयांसनाथ स्वामी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू भी अर्पित किया गया। इसके पश्चात बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य तरुण भैया, इंदौर के निर्देशन में श्रद्धालुओं को अभिमंत्रित धर्म रक्षा सूत्र बांधे गए। इस अवसर पर सभी को धर्मगुरुओं, धर्मायतनों एवं राष्ट्र की सुरक्षा का संकल्प दिलाया गया। हवन एवं शांति अनुष्ठान के माध्यम से श्रद्धालुओं ने आहुतियां अर्पित कीं। भोपाल से सपरिवार राघौगढ़ पहुंचे धर्मानुरागी एवं संत सुधासागर धाम राघौगढ़ में श्री संभवनाथ जिनालय के पुण्यार्जक परिवार से जुड़े सिंघई राजेश भारिल्य ने भी विधान में अर्घ्य एवं निर्वाण लाडू अर्पित किया। उन्होंने राघौगढ़ नगर में चातुर्मास कर रहे दोनों मुनिराजों का पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया

रक्षाबंधन पर्व पर एक-दूसरे को बांधा रक्षा सूत्र

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। बापूनगर स्थित श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में रक्षाबंधन के पावन अवसर पर भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक का निर्वाण लाडू श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ अर्पित किया गया। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि प्रातः श्री शांतिनाथ एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान का श्रद्धालुओं ने बारी-बारी से महामस्तकाभिषेक किया। मयंक पाटनी, कन्हैयालाल पाटनी, चांदमल जैन एवं प्रकाश पाटनी ने शांतिधारा की। इसके पश्चात निर्वाण कांड का सामूहिक पाठ किया गया और भगवान श्रेयांसनाथ के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्वाण लाडू उत्साह एवं भक्तिभाव के साथ अर्पित किया गया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान के जयकारे लगाए और धर्मलाभ अर्जित किया। ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जैन ने बताया कि रक्षाबंधन के पावन अवसर पर समाजजनों ने एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधकर भाईचारे, प्रेम एवं सौहार्द का संदेश दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में धर्मावलंबी उपस्थित रहे।

मिशन मुस्कान के तहत 50 विद्यार्थियों को 100 जोड़ी नवीन वस्त्र भेंट

रक्षाबंधन पर बच्चों के चेहरों पर खिली मुस्कान

जवाई बांध. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3233 ए-2 के प्रांतपाल एमजेएफ लायन निशांत जैन के प्रांतीय स्लोगन ''फ्लाइट ऑफ ड्रीम'' के अंतर्गत प्रांतीय प्रमुख सेवा कार्यक्रम ''मिशन मुस्कान'' के तहत लायंस क्लब अजमेर आस्था एवं लायंस क्लब सुमेरपुर जवाई के संयुक्त तत्वावधान में जवाई बांध क्षेत्र स्थित राजकीय इंद्रानगर प्राथमिक विद्यालय में सेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के 50 जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को 100 जोड़ी नवीन वस्त्र भेंट किए गए। प्रत्येक विद्यार्थी को 2-2 जोड़ी गणवेश प्रदान की गई। इसके साथ ही लायंस क्लब सुमेरपुर जवाई के सदस्यों के सहयोग से विद्यार्थियों को खाद्य सामग्री भी वितरित की गई। कार्यक्रम का संयोजन प्रांतीय सभापति ''मिशन मुस्कान'' लायन अतुल पाटनी के निर्देशन में किया गया। समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन मधु पाटनी एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से वस्त्र एवं सेवा सामग्री उपलब्ध कराई गई। मुख्य अतिथि एवं प्रांतीय एरिया कैबिनेट सेक्रेटरी लायन श्रवण राठी ने कहा कि जरूरतमंद बच्चों के चेहरों पर सेवा सामग्री प्राप्त करने के बाद आई खुशी ही इस सेवा की सबसे बड़ी सफलता है। उन्होंने कहा कि ऐसे सेवा कार्य ''मिशन मुस्कान'' की भावना को सार्थक करते हैं। कार्यक्रम में लायंस क्लब सुमेरपुर जवाई के अध्यक्ष लायन प्रवीण गुप्ता, पूर्व कोषाध्यक्ष लायन सुरेश एरण सहित क्लब के सदस्य उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाध्यापक छगनलाल मीणा ने लायंस क्लब के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया।